भक्तामर

१

॥अथ प्रथम काव्य यंत्र रचना॥१॥

॥र्द०॥ श्रीआदिनाथाय नमः श्रीसारस्वतीजी नमः श्रीमन्महागणाधिपतये नमः

भक्तामर कहतां भक्त देवता तिणे प्रणत कहतां प्रणाम्या मौलि मस्तक तेहनी मणि रत्न तेहनी प्रभा कांति तेहने उद्योतनकर

॥र्द०॥ श्रीगणेशाय नमः॥ भक्तामरप्रणतमौलिम

णहार वली केहवो छइ जिनपाद इरकीधो छे पापरूपीयो अंधकार नो समूह ह्विचइ सम्यक कहतां मन वचन कायाइं करी प्रणम्य प्रणमीनइं जिनपाद कहतां भगवंतना चरणकमल ते इं केहवां छे भवसाग

णिप्रभाणा॥ मुद्योतकं दलितपापतमोवितानं। सम्य

गनि आदि नइ विषइ:

आलंबनं कहतां आधार समान संसारसमुद्र

क्प्रणम्य। जिनपादयुगं युगादावालंबनं भवजले।

मादि पतां जे प्राणी तेहनइ आधार समान छइ:१

पततां जनानां: ॥१॥

॥अथ भक्तामरजी स्तोत्र का काव्य ऋद्धि मंत्र यंत्र विधि विधान संकलित ते अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं णमो जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः असिआउसा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं स्वाहा अथ मंत्र ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं ब्लूं क्रौं ॐ ह्रीं नमः एवं मंत्र ध्यानेन सर्व सिद्धि महाप्रभावी कसकलजनवश्य निवार सर्व सिद्धि महाप्रभावीक सकलजनवश्य निवारणं अथ यंत्र रचना ॐकारेण वेष्टितेच ऊर्द्ध सीह्रींकारेण विष्टयेत पश्चात ऋद्धि मंत्रेण वेष्टयेत तत्पश्चात दिक्षु ॐ ह्रीं कारेण वेष्टयेत् ४४ फरवसोभागवर्द्धनं विधिएव प्रथम काव्य ऋद्धि मंत्र यंत्र पदिता पकी वाचउपासरा भवाणकी सकल ऋद्धि सिद्धि संपदा

लक्ष्मी लाभ करेइ ति प्रथम काव्य ऋद्धि मंत्र यंत्र विधि विधान संपूर्ण॥१

१

॥अथ प्रथम काव्यं यंत्र रचना॥१॥



॥र्द०॥ श्री आदिनाथाय नमः श्री सारस्वती जीनमं श्री मन महागणं धिपत्तयें नमः । भक्तामर कहतां भक्त देवता तिणे प्रणत कहतां नम्या मोलिमस्तक ते हनी मणिरत्न ते हनी प्रभा कांति ते हनउ उद्योत न कर

॥र्द०॥ श्री गणेशाय नमः॥ भक्तामरप्रणतमौलिम
णाहार वली केहवो बई जिन पाद इरकीधो बेपाप रूप जो अंधकार
नो समूह दिवइ सम्यक कहतां मन वचन काया इं करी प्रणम्य प्रणमीन
इं जिन पाद युगम जगवंत ना चरण कमल बतइं के हवां बेजय वंत का
णि ज्ञाना॥ मुद्योतकं दलितपापतमोवितानं॥ सम्य
[illegible]
आलबनं कहतां आधार स
मानसंसारस
मुद्र
[illegible]णपादयुगं युगादा॥ बालंबनं भवजले॥
[illegible]जिन ली तेहनइ आधार स
मानवइ:प
[illegible]: ॥२॥

Tantric manuscript
Astrology

॥अथ भक्तामरजी स्तोत्र काव्य ऋद्धि मंत्र यंत्र विधि विधान संकलित
ते अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं णमो जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं
ह्रः असिआउसा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं स्वाहा अथ मं
त्र ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमः एवं मंत्र ध्यानेन सर्व सिद्धि महाप्रभावी
क सकल उपद्रव निवार सर्व सिद्धि महाप्रभावीक सकल उपद्रव
निवारणं अथ यंत्र रचना ॐकारेण वेष्टितेत्र उर्द सां ह्रीं कारेण
विष्टयेत् पश्चात ऋद्धि मंत्रेण वेष्टयेत् तउ परि स्वउ दिक्ष ॐ ह्रीं का
रेण वेष्टयेत् ४४ रूपरव सोभागण वइने विधिए चप्रथम काव्य ऋद्धि मं
त्र पढिता पछी गाथा यंत्र उपासरा भवाणाकी सकल ऋद्धि सिद्धि संपदा

लक्ष्मी लाभ कारे इति प्रथम काव्य ऋद्धि मंत्र यंत्र विधि विधान संपूर्णं॥

१

॥अथप्रथमकाव्ययंत्रस्तवना॥१॥

TANTRIC

॥६०॥ श्री आदिनाथाय नमः श्री सारस्वती जी नमः श्री मन महागणाधिपतये नमः:

भक्तामर कहतां भक्त देवता तिणे प्रणत कहतां प्रणाम्या मौलि मस्तक ते हनी मणि रत्न ते हनी प्रभा कांति ते हनै उद्योतनउ कर

॥६०॥ श्री गणेशाय नमः ॥ भक्तामरप्रणतमौलिम

णाहार वली केहवो छइ जिन पाद ड्डर कीधो छे पाप रूप जो अंधकार नो समूह दिवइ सम्यक कहतां मन वचन काया इं करी प्रणाम करीन इं जिन पाद युगं चरण कमल बे तइं केहवां छे जिन वंतक

लिप्रनाणा। मुद्योतकं दलितपापतमोवितानं। सम्य

...रवि | आलंबनं कहतां आधार स मान संसार स मुद्र

...पादयुगं युगादा। बालंबनं भवजले:

...डूं पणी तेहन इ आधार स मान छइ:१

: ॥२॥

॥ अथ भक्तामरजी स्तोत्र का काव्य ऋद्धि मंत्र यंत्र विधि विधान स्फुलिंग ति अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं णमो जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः असिआउसा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं स्वाहा अथ मंत्र ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रूं क्रौं ह्रीं नमः एवं मंत्र ध्यानेन सर्व सिद्धि महाप्रभावी कुसकल उपद्रव निवार सर्व सिद्धि महाप्रभावी कु सकल उपद्रव निवारणं अथ यंत्र स्तवना ॐकारेण वेष्टितेत्र ईसीह्रीं कारेण विष्टयेत् पश्चात ऋद्धि मंत्रेण वेष्टयेत् तदुपरि स्वस्ति क्रौं कारेण वेष्टयेत् ४४ कर कसोभा गण वर्द्धने विधिए वै प्रथमकाव्य ऋद्धि मंत्र पढि ता प्रकी वा यंत्र पासरा भवा णकी सकल ऋद्धि सिद्धि संपदा

लक्ष्मी लाभ का रे इति प्रथमकाव्यऋद्धि मंत्र यंत्र विधि विधान संपूर्णं

(Old Manuscript)

Handle with care

Manuscript
of
Bhaktamar Stotra

with pranams.
Vanabh.

BhakTamar Stotra

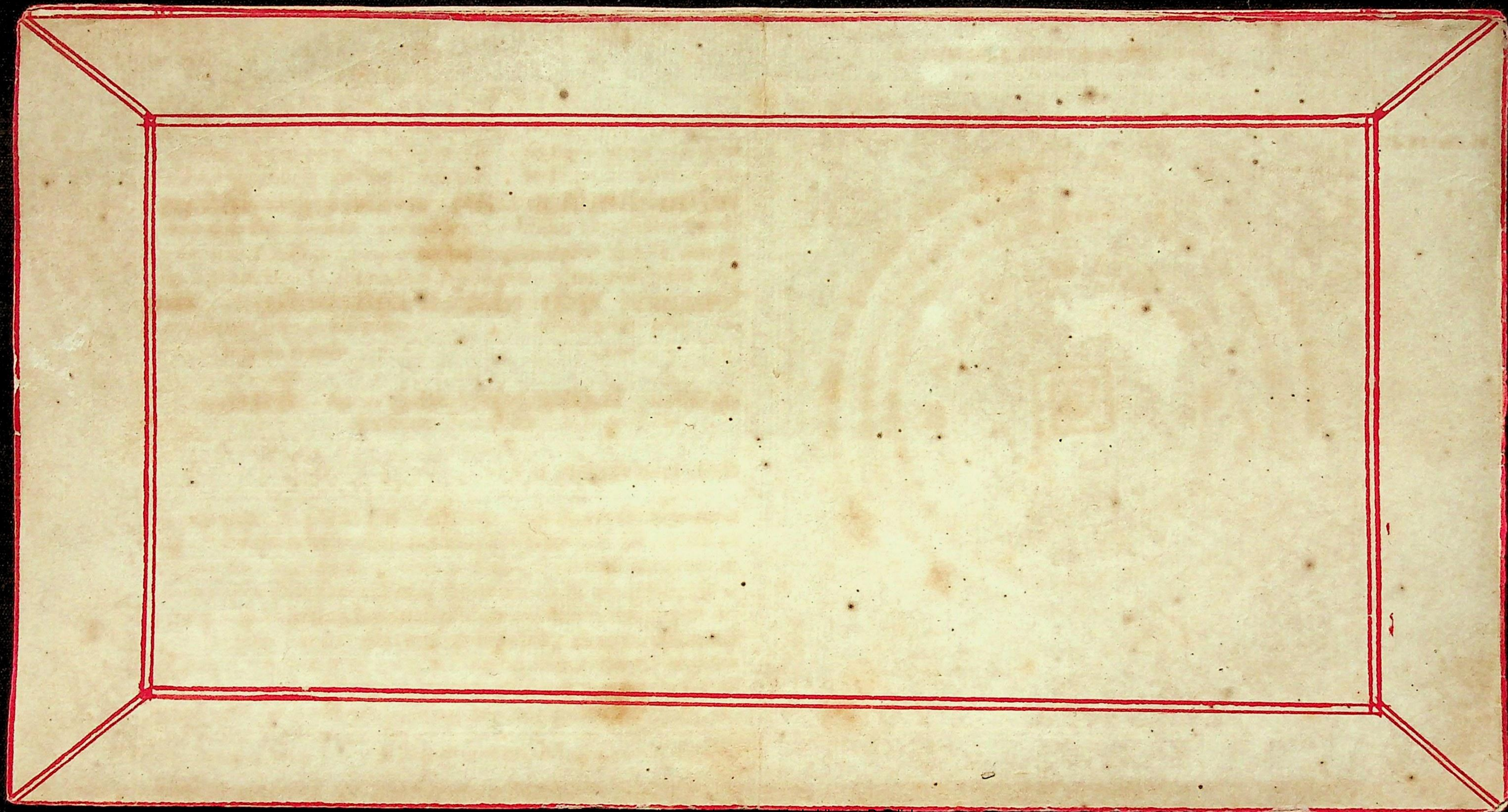
Bhak Tamar Stotra

॥ अथ पंचमांकाव्य ऋद्धि मंत्र यंत्र विधि विधान लिख्यते अथ ऋद्धि
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं अथ मंत्र ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं : सर्व संकट नि
वारणेभ्यो सुपार्श्वयक्षे यक्षेभ्यो नमः स्वाहा एकाग्र पवित्र थकी
मंत्र जपिवा थकी वांछा पास राखवा थकी सर्व सिद्धि थाय अथ यंत्र
स्थापना ग्लौं कारेण वेष्टयेत् भुवनेशी कारेण पंचविंसति २५ वेष्टयेत्
पश्चात् ऋद्धि मंत्रेण वेष्टयेत् तदुपरि ह्रौं कारेण वलयद्वयं पंचवि
संति २५ वेष्टयेत् अयं रूप कृत्वा आप रूप णीति सको आराधे
यति इष्ट रूप ने सारो दिन के पीराषी सज्जा विरीयाता २२ पता
सां मंत्री पाणीमे घोलि पाइजे वामाथीचा की जे आप दूषती रहे नेत्र
विकार सर्व मिटे इति पंचमा काव्य ऋद्धि मंत्र यंत्र विधि विधान संपू
र्णम् ॥ ५ ॥

२

Tantric manuscript
Astrology

TANTRIC





॥अथ प्रथमकाव्ययंत्रस्तना॥१॥

भक्तामर

१

ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं

॥अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं ... नमः

ॐ

॥ॐ॥श्रीआदिनाथायनमः श्रीसारस्वतीजीनमः श्रीमनमहागणाधिपतयेनमः ‖ भक्तामरकृत्तोभक्त देवतातिलोकपूज्य तद्देवताप्रणमामौलिमस्तकतेहनीमणिरत्न तेहनीप्रभाकांतितेहनउद्योतनउकर

॥ॐ॥श्रीगणेशायनमः॥भक्तामरप्रणतमौलिम णाहारवलीकेहगो बई जिनपादद्वरकीक्षे बेपापरूपीजोअंधकारा नोसमूहदिवइसम्यककहतामनवचनकायाइंकरीप्रणम्यप्रणमीन इजिनपादयुगमचगवतनाचूरणकमलप्रतइंकेहवांछेंमगवंतप्र णिप्रभाणा॥मुद्योतकंदलितपापतमोवितानं॥सम्य

गनिआदिनइवि वइः

आलंबनंकहतांआधारस मानसंसारस मुद्र

क्प्रणम्य॥जिनपादयुगंयुगादा॥वालंबनंभवजले॥

मादिपडतांजिउप्राणीतेहनइआधारस मानछइ:१

पततांजनानां:॥१॥

॥अथभक्तामरजीस्तोत्रकाव्यऋद्धिमंत्रयंत्रविधिविधानसंलिख्य ते अथऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हंणमोअरिहंताणं णमोजिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः असिआउसा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं स्वाहा अथम त्र ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमः एवंमंत्रध्यानेनसर्वसिद्धिमहाप्रभावी कसकलउपद्रवनिवारसर्वसिद्धिमहाप्रभावीकसकलउपद्रव निवारणं अथयंत्रस्तना ॐकारेणवेष्टितेयंत्रेदसीह्रींकारेण विष्टयेतत्पश्चातऋद्धिमंत्रेणवेष्टयेत तदुपरिस्वरदिक्षुतेह्रींका रेणवेष्टयेत ४४ रूपरवसोमागणवइनेविधिएप्रथमकाव्यऋद्धिमं त्रपदितायकीवारअउपासराभगवानकीसकलऋद्धिसिद्धिसंपदा

णस्मीजाणकारेइतिप्रथमकाव्यऋद्धिमंत्रयंत्रविधीविधानसंपूर्णं

१

॥द्वितीयकाव्यस्य यंत्र मिदं २॥

ॐ क्रां ॐ क्रां ॐ क्रां ॐ क्रां ॐ क्रां ॐ क्रां ॐ क्रां ॐ क्रां
ॐ क्रां ॐ क्रां ॐ क्रां

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उहिजिणाणं
अथ मंत्र

श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं नमः

ॐ क्रां ॐ क्रां ॐ क्रां ॐ क्रां ॐ क्रां ॐ क्रां ॐ क्रां ॐ क्रां ॐ क्रां ॐ क्रां

कुमति निवारण ऋद्धि मंत्र:

ह्रीं

[illegible]

[illegible]

वली जेणगयें तय संस्तुत कहतां स्तव्यउं पि णकेहवाबइ सकल सास्त्र तेहनो बोधकहतां ज्ञान जाणिवउ तेहथकी । उद्भूत कहतां ऊपनी जिका बुधि कहतां मति निर्मली तिणइ क

यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा । दुद्भूतबुद्धिप

रीप्रवृधा एहवा गटवा देवलोकनाना थइं जेतीया कप एस्तवीं काये करीनइं स्तोत्र इं करीनइ केहवा स्तोत्र तीन जगतना चित्तना हरणहा रवली उदार कहतां प्रधान : महन्त नाम मोटो छे ॥ श्रीजिनाय॥

टुभिः सुरलोकनाथैः । स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तहरैरु

स्तोष्य कहतां स्तवीस कल निश्चय सफल विणते पहिला जिनेंद्र श्री आदिदेव प्रवर्तइ द सत्ते रनश३।४।५ की द संप्रथमं जिनेंद्र:॥२॥

दारैः । स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेंद्रं ॥२॥

॥अथ द्वितीयकाव्यऋद्धि मंत्र यंत्र विधि विधान लिख्यते अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो उहिजिणाणं अथ मंत्र ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः अनेन मंत्र जपनात् कुमति निवारणात् एयंत्र कुमति विनासनं द्वितीय यंत्रस्य मध्ये ह्रीं कारेण वेष्टयेत् तदुपरि स्वितरविसति विसति श्रीं कारेण वेष्टयेत् पश्चात् ऋद्धिमंत्रेण वेष्टयेत् अथ विधि पश्चात् ककाराकरेणें कारेण संयुक्तं छिया जीसं वेष्टयेत् अथ विधिए द्वितीयकाव्य ऋद्धि मंत्र यंत्र जपिवा थकीयंत्र पास राखिवा थकी निजरबंधटोय इति

द्वितीयकाव्य ऋद्धि मंत्रयंत्र

विधी विधान संपूर्णम

॥२॥

बेकाव्य नोजलो अर्थः | श्रीमानतुंग आचार्य कहइ छइ हे स्वामि हूं बुद्धइ करी रहि तछुं अनइ जगवंत नइ विबुध कहतां तिणइ अर्चित पू ज्यो पादपीठ सिंहासन जेहनो बुद्धि विना पिण स्तोत्र करव

युग्मं। बुद्ध्या विनापि। विबुधार्चितपादपीठ। स्तोतुंस

तो तेहनइ स्तवि वाम्मलीयइ मद्रं तमति बुद्धि गतत्रपो कहतां हे। स्वामानी निर्लज बुद्धि ढोठ थको तक | हुं छइ बालक पूतइ वर्जि नइ अन्यो रपाणी नइ विंबं रसोभंड मानो मं नस अन्यत्र कहो मनुष्य कुण ग्रहवा

मद्युतमतेर्विगतत्रपोहं। बालंविहायजलसंस्थि

एतावता तेहनी परइ छं वां छजिम जिन लोक ततकाल कहं मनल ग्र
हवी नइ काजइ र श्री जिन अपित्रनः ततकाल यद्व राम्मणीत

तमिंदुबिंबं। मन्याः। कइच्छतिजन सहसाग्रहीतुं

॥अथ तृतीयकाव्यऋद्धिमंत्रयंत्रविधिविधान लिख्यते अथऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहिजिणाणं अथमंत्र ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सिद्धेभ्यो बुद्धेभ्यो सर्वसिद्धिदायकेभ्यो नमस्वाहा ए काव्य ऋद्धि मंत्र पठनात् जपनात् पापार्त्तरक्षणात् अथयंत्रस्थापना श्रीकार रेखावेष्टयेत् चतुर्दश क्लींकार रेखा॥२५॥ वेष्टयेत् छब्याज तद्विदत्वा तदुपरि ॐ नमो भगवते परमतत्वार्थभाव कार्यसिद्धि ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः अथ स्वरूपाय नमः अनेन मंत्रेण वेष्टयेत् अथविधि एकावीप दिवा पछी मंत्र जपिवा पछी वासंतुपासरा विवा पकी ड्रस्मन की निजर बंधी होय ॥२१॥ चारपाणी की चलकमंत्र करी छांटी जे सर्व प्रलय होय इति श्री तृतीयकाव्यसं
पूर्णम्॥३॥

स

॥चतुर्थी काव्यमिदं॥४

	सौं	सौं	सौं	सौं	सौं	सौं	सौं	

अथ ऋद्धि: ॐ ह्रीं अर्हं णमो

ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं

सव्वोहि जिणाणं अथ मंत्र

ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं

क्लीं

क्लीं

ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं जलजलाजलदेव

ताभ्यो नमः इति ऋद्धिमंत्र

ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं

सौं सौं सौं सौं सौं सौं (left column)

सौं सौं सौं सौं सौं सौं (right column)

सौं सौं सौं सौं सौं सौं (bottom row)

बोलिवानइं काजइं ऊदार्यादिक गुण छत इ २ गुणांरा सागर स्वेद मानी ए रइं तन उज्ज्वल ते इह एतइ: उत्तम थां दृष्टांतेन दृष्यति हे गुणसमुद्र इति:

वगस्वंइती हे जिनेंद्र ण ब्रुरुषता हराग णक इतांम लीस मर्थ:

वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र शशांककांतान् कस्ते क्षम

क्रवइ वलीहृद स्पती सरीष उत्तम बुद्धइ करि नइ तउपि एक ह्राइ नही:

इहां दृष्टांत कहइ कल्पांत काल प्रलय काल रो मनवायु ते णउ उ तकद तां जवर जीव ते इह नउ:

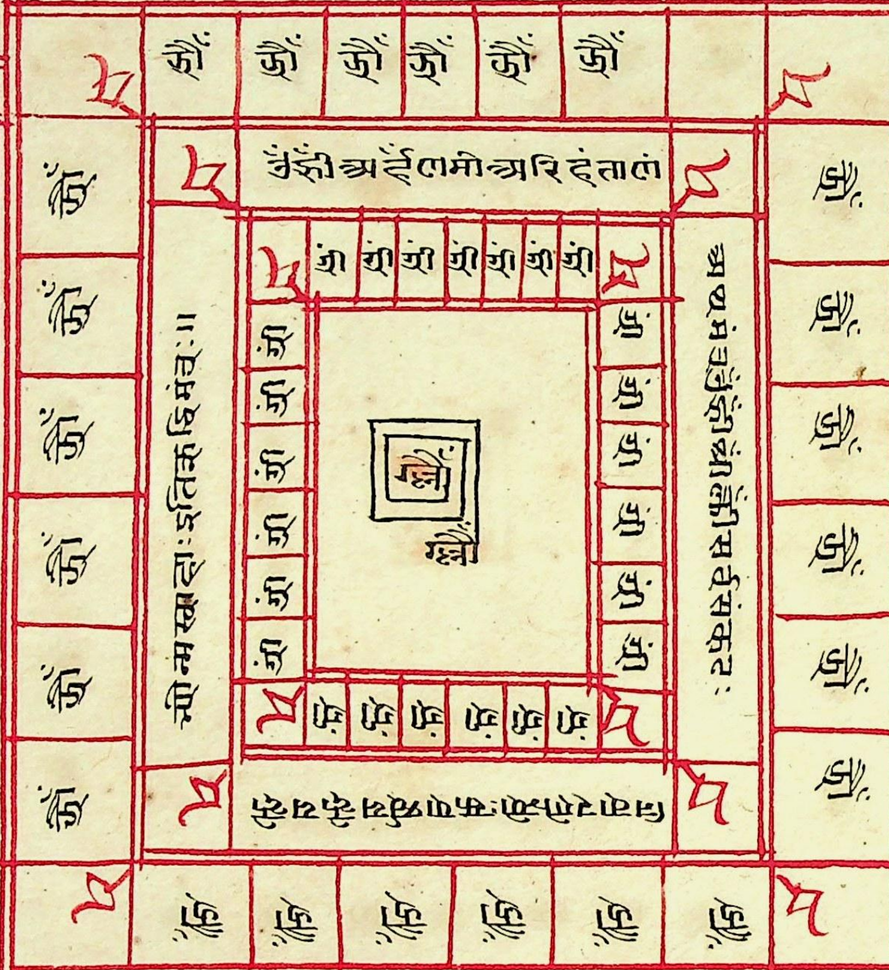
सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या। कल्पांतकालपवनोद्धत

वक्र समुद्र गएह वउक्र णम ठ छातरिवानइ काजइ समर्थ जवइं समु इउत इ पिण किण इ आपणी जायइ तरीयइ:॥४॥

नक्रचक्रं। को वा तरीतुमलमंबुनिधिं भुजाभ्यां॥४॥

॥अथ चतुर्थ काव्यानी ऋद्धिमंत्र यंत्र विधि लिख्यते अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं॥ अथ मंत्र ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं जलजलाजलदेवताभ्यो नमः॥ अथ यंत्र रचना क्लीं कार मध्ये वेष्टयेत् तदुपरि ग्लौं कारेण [illegible]रिसति २८ वेष्टयेत्॥ अथ विधि एकाव्य वा ऋद्धिमंत्र वा अथवा पढिवा थकी। गायंत्र पासरा ए वार थकी। वार २१ का करी ७ मंत्रि पाणीमे नाषीजे जलमे माछली नही आवै इति चतुर्थ काव्यानि ऋद्धिमंत्र यंत्र विधि विधान संपूर्णम्॥४॥

॥अथपंचमाकाव्यस्य यंत्र लीख्यते॥५॥



तो हुं एहवउ थकौ पिण ताहरी भक्ति न विषै सेषथकौ हे मुने वर्णनाइ स्वामि हे मुनी करिवानकाजइ स्तवनप्रवर्त्तइ गयइ छइ सक्ति समर्थाइ जेहथकी सो

सोऽहं तथापि तव भक्तिवसान् मुनीस । कर्तुं स्तवं वि

पितां हुं ए वर्त्तउ ब: ईहां द्रष्टांत कहइ छइ जी तइ करी नइ पोतानां बाल काप्रतइ अणविचारी नइ हरिणी सीहप्रतइ नाभ्येति किं साम्हउ न आवइ स्यूं अपि ::

गतसक्तिरपि प्रवृत्त । प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगीम

तो थायइ आपणा बालक प्रतइ परिपालिवा राषिवा निमित्त मृग समक्ष हरणथायइ सीहप्रतइ ॥५॥

गेंद्रं । नाभ्येति किं निजसिसो । परिपालनार्थं ॥५॥

॥अथ पंचमा काव्य ऋद्धि मंत्र यंत्र विधि विधान लिख्यते अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं अथ मंत्र ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं : सर्वसंकटनिवारणेभ्यो सुपार्श्वयक्षेभ्यो नमस्वाहा एकावपदिवाथकी वा मंत्र जपिवाथकी वा यंत्र पासराषवाथकी सर्वसिद्धि थाय अथ यंत्र स्वना ग्लौं कारेण वेष्टयेत् भुवनेश्री कारेण पंचविंसेति २५ वेष्टयेत् पश्चात् ऋद्धिमंत्रेण वेष्टयेत् तदुपरि क्रौं कारेण वलयदत्वा पंचविंसति २५ वेष्टयेत् अयं रूपकृत्वा आषहूषलीजिसकी आंषि यतिह्व्व रूपनेसारो दिनकषीराषी सज्याविरीयाना २२१ पतासां मंत्री पाणीमे घोलि पाइजे वामा थी चाकीजे आंष दूषती रहे नेत्र विकार सर्व मिटे इति पंचमा काव्य ऋद्धि मंत्र यंत्र विधि विधान संपूर्णम् ॥५॥

॥ अथ षष्टमा काव्यस्य यंत्रं ६

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

श्रीं	श्रीं	श्रीं	श्रीं	श्रीं

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कुट्ठबुद्धीणं

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं स्वदास्तये सरस्वती भगवती विद्या प्रसादं कुरु स्वाहा

हिवइं श्रीमानतुंगसूरि कहइ छइ हे भगवंत थोडउ ज्ञान छइ मुझ पुत हुं ज्ञानवंतां माहि हासानउ ठाम छउं:

हे स्वामी तो विणता हरी भक्ति ही ज बलवंतपणइ वाचाल करइ छइ ॥

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम्।

जोइ करी मुखपूतइ:

जे कारण कोयल निश्चइं सउ वसंतमासविषइं आंबानी कलीनउ ज्यातेस कारणइ वसंतमासनउ गाउ:

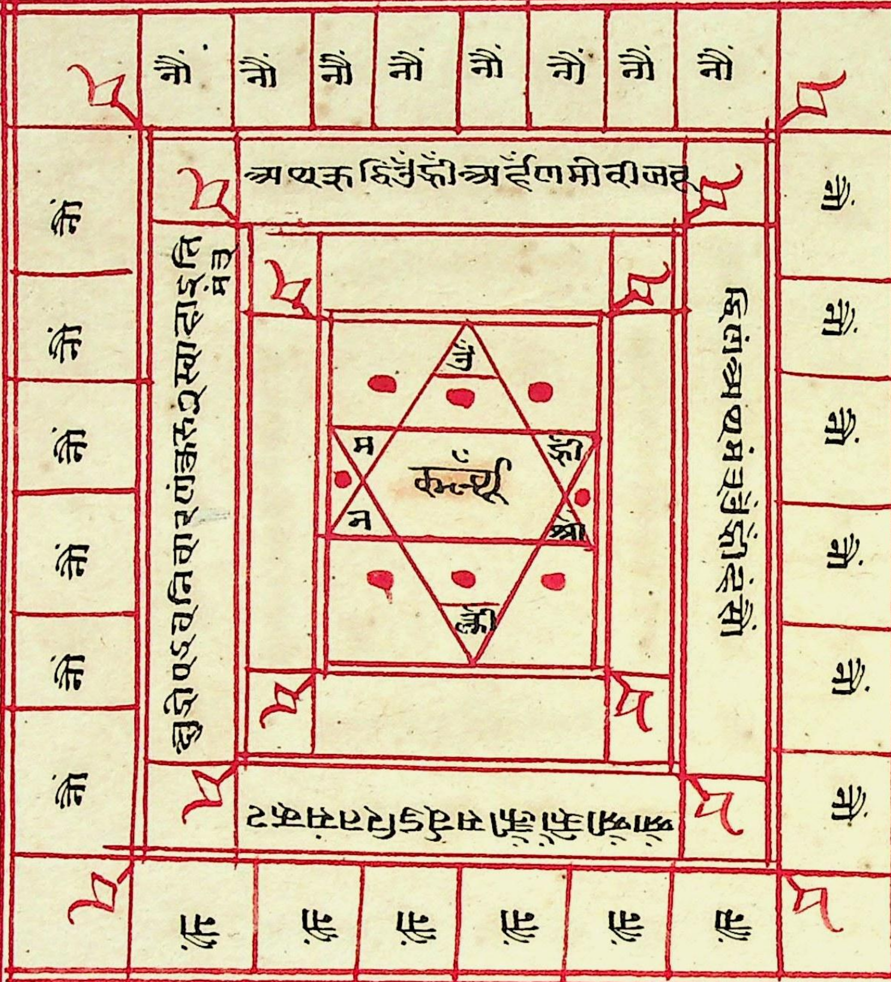
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति

मनोहर स्वरवाली तेहना कलिकानां मंजरी तेहनौ निकरण समूहइ ते हिज एक अद्वितीयकारण छइ:६

तच्चारुचाम्रकलिकानिकरैकहेतुः ॥६॥

॥ अथ षष्टमा काव्य ऋद्धि मंत्र यंत्र विधि विधान लिख्यते अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो कुट्ठबुद्धीणं ॥ अथ मंत्र ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं स्वदास्तये सरस्वती भगवती विद्या प्रसादं कुरु स्वाहा अथ यंत्र स्थापना ह्रींकार मध्ये वेष्टयेत् श्रींकार द्वाविंशति २२ वेष्टयेत् पश्चात् तदुपरि वेष्टयेत् ह्रींकारेण पंच विंशति २५ ॥ वेष्टयेत् अथ विधि एकासणे दिवा थकी मंत्र जपिवा थकी यंत्र पासे राखिवा थकी विद्या सतावटी आवे अरु विछड्यो आय मिले इति षष्टमा काव्य ऋद्धि मंत्र यंत्र विधि विधान संपूर्णम् ॥६॥ ॥श्री॥

॥अथ सप्तमा काव्यस्य यंत्रमिदं ७



कहैछै इ ताहरइ स्तवनइ करीनइ हे स्वांमिन भवसंसार तेहनी संचित श्रेणि तिणइ करीनि वृम बांधी बइ ॥ पापरूप ते क्षण एकमांहि क्षय थाइ सा हाणपतां इ रासीरकं ती था

त्वत्संस्तवेन भवसंततिसंनिबद्धं । पापं क्षणात क्षयमु

णीजीवांनी अरहंत छांतक रइ बइव। जीपाप अंधकार केहवउ बइ आक्रम्यो बेलोक जायइ पी माकार कवलीके हवउ बइ भ्रमर श्रेणीनी परइ अतिकालबइ:

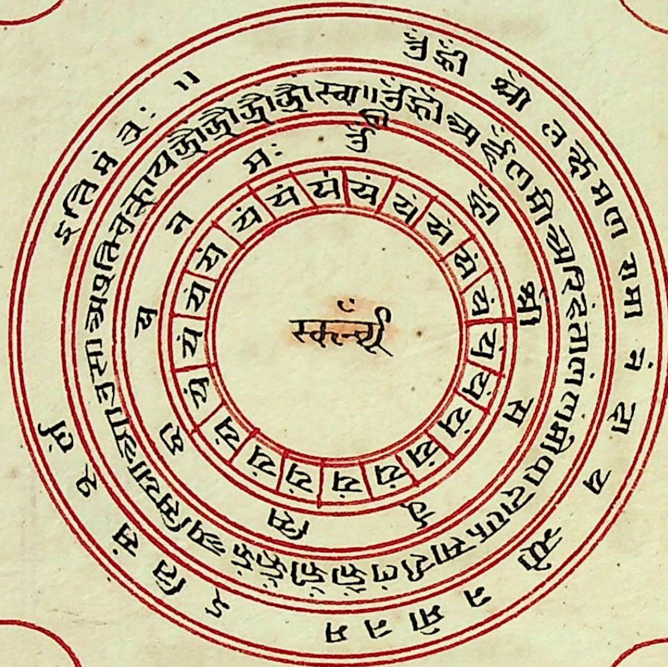
पैति सरीरभाजां । आक्रांतलोकमलिनीलमसेष ॥

तेसगलोउतावलउ सूर्यनइ किरणे करीनइ वेद्यो सन्निसंबंधी उ अंधकार सूर्यनइ किरणे करीनइ क्षय थाइ ॥७॥

माशु ॥ सूर्यांशुभिन्नमिव सार्वरमंधकारं ॥७॥

॥अथ सप्तमकाव्य ऋद्धिमंत्र यंत्र विधि विधानं लिख्यते अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीजबुद्धिणं अथ मंत्र ॐ ह्रीं हं सौं श्रां श्रीं क्लीं क्रौं सर्व दुरित संकट क्षुद्रोपद्रव निवारणं कुरु कुरु स्वाहा अथ यंत्र स्थापन षट्कोण यंत्र कृत्वा मध्ये क्ल्व्यूं लिखते ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः एवं अक्षर लिखित पश्चात ऋद्धि मंत्रे लरे वेष्टयेत पश्चात नौंकार षट विसे २६ न वेष्टयेत अनेन प्रकारेण यंत्र कृत्वा अथ विधि एकाग्रपदि गाथ की वा ऋद्धि मंत्र अपि वा पछी वा यंत्र गले बांधे तो सर्व विष मिटे कोइ जातिको ताव विष अथवा जंगम विष को भय न होय सर्पकी लूण वार १०८ कांकरी मंत्र सर्प रा माथा उपरि गेरिजे सर्प हीलण पावे न ही इति सप्तमा काव्य ऋद्धि मंत्र यंत्र विधि विधानं संपूर्णम् ॥७॥

॥ अथ अष्टमा काव्यस्य यंत्रमिदं ॥८॥



तो हे एहवउं जाणीनइ जे स्तोत्र शक्त इ हे नाथ हे स्वामी ताहरा स्तोत्र प्रतइ मंडानइं:

अत्र मास्य पते कहतां अल्पीय इ बुद्धि छउं पिण इ करीनइ वि णताहरा प्रभाव थकी

मत्वेति नाथ। तव संस्तवनं मयेद। मारभ्यते तनुँपि त। धिया

वली कहइ छइ एताहरो स्तोत्र सर्व नाचित्तनो हरणहार होस्यइ पिण कीहनो सज्जन मनुष्यना चित्त हरिस्यइं इहां द्रष्टां त कहइ छइं

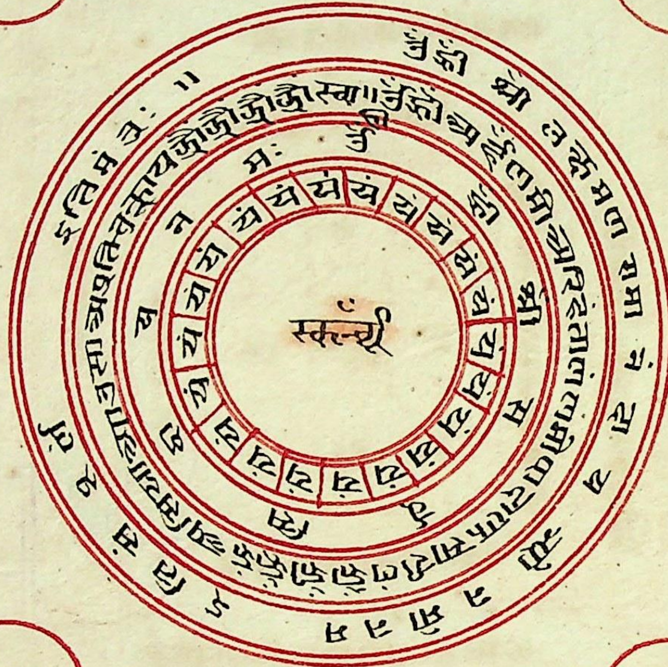
तव प्रभावात् चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु मु

जिम कमल नां पानडा ऊपरि पाणीनउ बिंदु मुक्ताफल मोतीनी कांति समान उपः सोभा पामइ तिम एत वन सोभा पामइ ॥८॥

क्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिंदुः ॥८॥

॥ अथ अष्टमा काव्य ऋद्धि यंत्र विधि विसं न लिख्यते अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं णमो पादाणुसारिणं अ थ मं ॐ ह्रीं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं स्वाहा अथ यंत्र स्थना अष्टदल यंत्र करु त्रामध्ये स्क्ल्व्र्यूँ ते नमो सर्व सिद्ध पलि खीतौ तदुपरि रिद्धि मंत्रेण वेष्टयेत् पश्चात् यंकार एकोन विंसति २१ वेष्टयेत् अयं प्रकारेण यंत्र कृत्वा एकाग्रपदि गाय की वा चूर्ण का करी ७ वार १०८ तबली झाडिजे तो दूषणो द्रवेन दीपीडा करे नहीं: इति अष्टमा काव्य ऋद्धि मंत्र विधि विसं न संपूर्ण म्॥८॥

॥अथअष्टमाकाव्यस यंत्रमिदं॥८॥



तो हे एहवउं जांणीनइ जे स्तोत्र श्रुतइ हे नाथ हे स्वांमी ताहरा स्तोत्र प्रतइ मयानइ:

आरंभीइ छइ ते कहतां आरंभीयइ छइ हूं तुच्छबुद्धि इकरीनइ पिण ताहरा प्रभावथकी

मत्वेति नाथ। तव संस्तवनं मयेद। मारभ्यते तनूधि(पि)त। धिया

वली कहइ छइ एताहरो स्तोत्र सर्वनां चित्तनो हरणहार होस्यइ पिण

कहनो सज्जन मनुष्यनउ चित्त हरिस्यइ इहां दृष्टां

त कहइ छइ

तवप्रभावात् चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु मु

जिम कमल नां पातरू परि पांणीनउ बिंदु मुक्ताफल मोतीनी कांति

समानउ प: सोभा पांमइ तिम एत

उ न सोभा पामइ ८

क्ताफलद्युति मुपैननूदबिंदु ८

॥अथ अष्टमाकाव्य ऋद्धि वृद्धि विधि विसंनलिख्यते अथ ऋद्धि
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं णमो पादाणुसारिणं अथ मंत्र ॐ ह्रां ह्रीं
ह्रूं ह्रः असिआउसा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं स्वाहा
अथ यंत्र स्थापना अष्टदलेयंत्र रुत्वा मध्ये स्क्ष्म्ल्व्र्यूं तेनमो सर्वसिद्ध
यलिरवतीत दुपरि रिद्धिमंत्रेण वेष्टयेत् पश्चात् यंत्रकारण कोन
विंसति २१ वेष्टयेत् अयं१कारेण यंत्र कृत्वा एकाचपदि गाय
की वालूण कांकरी ७ वार१०८ हणवी झाडिजे तो दूषणो दूबेन
दी पीडा करे नही: इति अष्टमाकाव्य ऋद्धि मंत्र विधि विसंन संपूर्ण
म॥८॥

॥ अथ नवमा काव्यं यंत्रमिदं ९॥

५	नौं	नौं	नौं	नौं	नौं	नौं	नौं	५
क्रौं	५	ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं					५	ॐ
क्रौं	ह्रीं स्रूं नमः	५	ॐ नमो भगवते जय जय		५	श्रीं सम्यक्त्व	ॐ नमो	ॐ
क्रौं		स्वाहा॥	ॐ	रि	ष	ह्रीं अंतरिक्ष ...		ॐ
क्रौं			हा	ऋद्धि	य			ॐ
क्रौं			स्वा	म	न			ॐ
क्रौं	५	५	९२ ...			५	५	ॐ
५	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ		५

अहो रुषभादि देव एहवा म्हारा जे स्तोत्र स्तवन इं केहवुं छइ सर्व दोष नउ हरण हार छइ सो तो अलगउ रहो त्वदीय पवित्र म्हारी जे कथा गोष्ठी छइ ते हि जगतां सर्व संसार॥

आस्तां तव स्तवनमस्त समस्त दोषं। त्वत्संकथापि ज

ना जीवां ना दुरित कहतां पाप निवार ण हार छइ ति दृष्टांत कहै छै जिम सहस्र किरण सूर्य अलगौ रहइ छइ अनै सूर्य नी प्रभा कहतां कांति सू करै

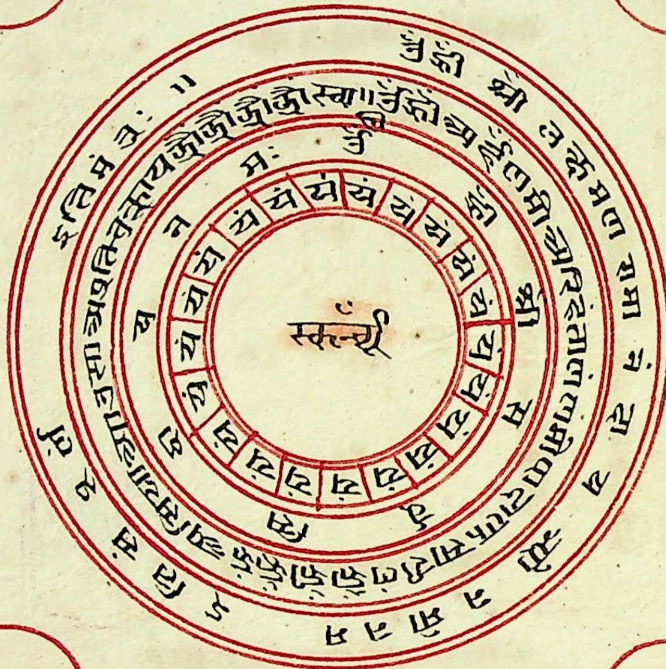
गतां दुरितानि हंति। दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव

पद्माकरे सरोवर नै विषइ सूर्य विकासी कमल छइ तिवांनइ विकस्वर पणौ पमाडइ छइ एतावता सूर्य उगा कमल तो फूल विकसइ छइ॥९॥

व। पद्माकरेषु जलजानि विकासभांजि॥९॥

॥ अथ नवमा काव्य ऋद्धि मंत्र यंत्र विधि विधानं लिख्यते अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं णमो जिनसोहराणं ह्रां ह्रीं हूं फट् स्वाहा अथ मंत्र ॐ ह्रीं श्रीं क्रौं क्लीं र र: र ह ह नमः अथ यंत्र स्तना पत्र दल कमल कृत्वा तन्मध्ये ऋद्धि ॐ रिषाय नमः कमल मध्ये लिखे तत उपरि ऋद्धि मंत्रेण वेष्टयेत् तत उपरि नौं कार पंच विंसति २५ वेष्टयेत् अयं अक्षरेण वलीदत्ता ॐ नमो भगवते जय जय ह्रीं स्रूं नमः स्वाहा अनेन मंत्रेण वेष्टयेत् अथ विधि एकाग्र चित्त थकी वा ऋद्धि मंत्र जपितां थकी राह की रणमें स्वारि कांकरी वार १०८ मंत्री व्यां सू तर फ मेल्हे आवै चोर जाव ण न पावे चोर का भय पंथ होय इति नवमा काव्य ऋद्धि मंत्र यंत्र विधि विधान संपूर्णम्॥९॥श्री॥

॥अथ अष्टमा काव्यस्य यंत्रमिदं ॥८॥



तो हुं एहवउं जाणीनइं जे स्तोत्र
इतउ हे नाथ हे स्वामी ताहरा
स्तोत्र प्रतइं मयानइं:

आरभ्यते कहतां आरंभीयइ
इ छइं तनु अल्प बुद्धि इं करीनइं वि
ण ताहरा प्रभाव थकी

मत्वेति नाथ । तव संस्तवनं मयेद । मारभ्यते तनुधिपि त । धिया

वली कहइ छइ एताहरो स्तोत्र सर्व नाचित्तनो हरणहार होस्यइ पिण
कीहनो सजन मनुष्यनउ चित्त हरिस्यइ इहां दृष्टं
त कहइ छइं

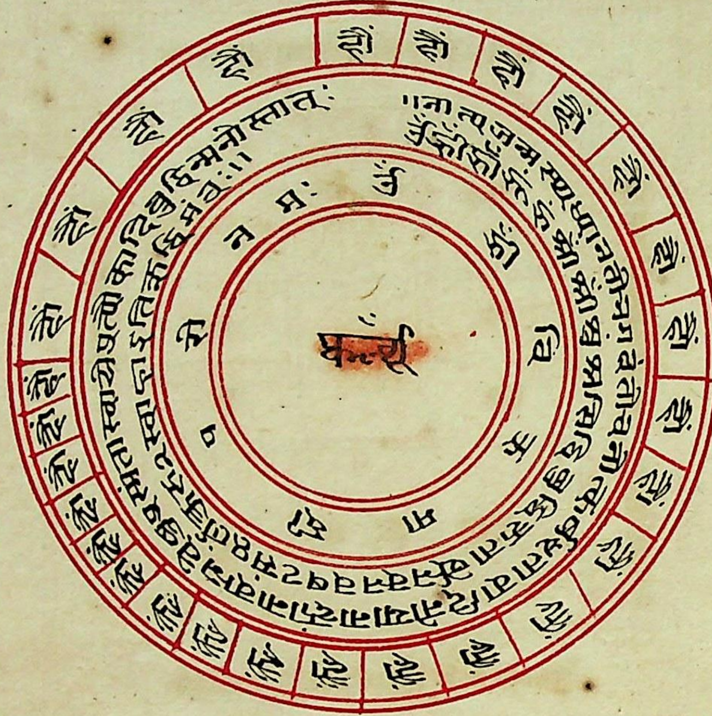
तव प्रभावात् चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु मु

जिम कमलिनी पातऊपरि पांणीनउ बिंदु मुक्ताफल मोतीनी कांति
समान उप: सोभा पांमइ तिम एत
व नसीमा पामइ ८

क्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिंदु ८

॥अथ अष्टमा काव्य ऋद्धि वृद्धि विद्धि विसंन लिख्यते अथ ऋद्धि
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं णमो पादाणुसारिणं अथ मंत्र ॐ ह्रीं
ह्रँ ह्रः असिआउसा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं स्वाहा
अथ यंत्र स्वना अष्टदल जे यंत्र रूपाम ध्ये स्क्ल्व्यूँ ते नमो सर्वसिद्धा
यलि रवी तीत दूपरि रिद्धि मंत्रेण वेष्टयेत् पश्चात् यंत्र कारए कोन
विंसति २१ वेष्टयेत् अयं यंत्र कारेण यंत्र कृत्वा एकाग्रपडि गाय
की वालूण कांकरी ७ वार १०८ ह्रवर्णी झाडिजे तो ह्रदयणो ह्रवेन
ही पीडा करेन ही: इति अष्टमा काव्य ऋद्धि मंत्र विधि विसंन संपूर्ण
म् ॥८॥

॥अथ दसमा काव्य यंत्रं १०



अहो त्रिलोकवनभूषण अलंकारसमान भू | हो तेहु जे उद्यान भइं ते
तजे प्राणी जीवतै हनाम्य स्वामी वली | विद्यमां नफ्फण करी ए १
हो श्री युगादि देव एतावतन ऊ अविरजन | वा नइ विषइ तीप्रतस

नात्यद्भुतं भुवनभूषणभूतनाथ। भूतैर्गुणैर्भुवि भवं त
जस जन मनुष्य ष्यियास्त वंती जनानां म० स्तवनी कृपा वरइ वे तेग
णना करणहार उ म्ह सरीषा कुवइ एत्व भूत त्वा श्वार्थ नहीति सांहु
ष्टं तकुहइ भइ तेन स्वामिना किं स्यात तेन स्वामि करने कां इंड अपि
मभिष्टवंत। तुल्या भवंति भवतो ननु तेन किं वा। उनकिमपि
स्यात कुप क रून दीकु वेन दीकु श्छु विसे बणए संसारने विषइ सत
रूष धनवंत नर तेहनइ जे आश्रे ते पिण धनवान कुवइं तिम तम्हां भ
नइ सेवइ ते अम्ह सरीषा उकुवइ आप रैरै री वकरी तिन करै जा त्म
भूत्याश्रितं य इह नात्म। समं करोति।१०। समं न करोति०

॥अथ दसमा काव्यनि रिद्धि विधि नलिष्यते अथ ऋद्धि जन्मस्था
धांन नो ज शतो वा मनो त्कुर्ष शत्वा वादिनो यीनाक्ष नागान वेक ए सां
तां ध्याये एत्ये कादि ह्री म नोस्तात अथ मंत्र ॐ ह्रीं ह्रां ह्रूं ह्रः श्रीं श्रीं
भूं भ्रं सिद्ध बूध्य कुत्वा र्योनि वर च षट संपूर्ण ऊ रू र स्वाहा अथ यं
त्र दस मदल कमलं कृत्वा तन्मध्ये अर्हं ह्रीं विक्रमाद्दीप रोनमः
अयं अक्षरं लिखित वजिदत्वा तद्व परिकुद्धि मंत्रेण वेष्टयेत तदो का
रस ह विंसति २७ अक्षराणि वेष्टयेत तदुपरि ॐ ह्रूं नमो सउ विनास
य जय उपसर्ग हरणनम अथ मंत्रेण वेष्टयेत अथ विधि एकावृ
पदि वाच्य को कहि मंत्र जपि वाच्यको यंत्र ए सराब वाच्य काए मंत्र से
ती कुछ वाणी करण इजे तो स्वान विषकु तरं लेंएण को करी वार १०
चांकी जे तो स्वांन कि झटको विष सर्व जाति को
विष उत्तर जाय इति दसमी संपूर्णः॥

कं श्री इदं नात्यद्भुतं ना इति आचार्य कारी

करोति वकर हीरिया कु० यमस्य स्वांमी इह सं किंच इः १०

॥अथ एकादसयंत्रस्वना॥११॥

ॐ नमो भगवते सिद्धरूपाय नमः

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेयबुद्धीणं

ॐ	ह्रीं	सौं	क्लीं
मः		ऊँ ह्रीं	श्री
न			भ
य	ण	रू	क्ति

[illegible]

[illegible]

सांसीं ह्रीं क्रौं नम स्वाहाः

क्लीं नम स्वाहा

सिद्धिमंत्र: ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रां श्रूं

अयंबलिदत्वा: इति

द्विवइ श्री मानतुंगसूरि कहै छै जे हे स्वामी तुम्हांनेइ मेषोन्मेषरहित दृष्टइ देषीनें नामग्रारइ रूपअनेमेक वलिलोकवारी सतनावणारी हे स्वांमि तेमनकष्य नालोचनकहता नेत्र अनपत्र कहतां बीजांनइ देषी

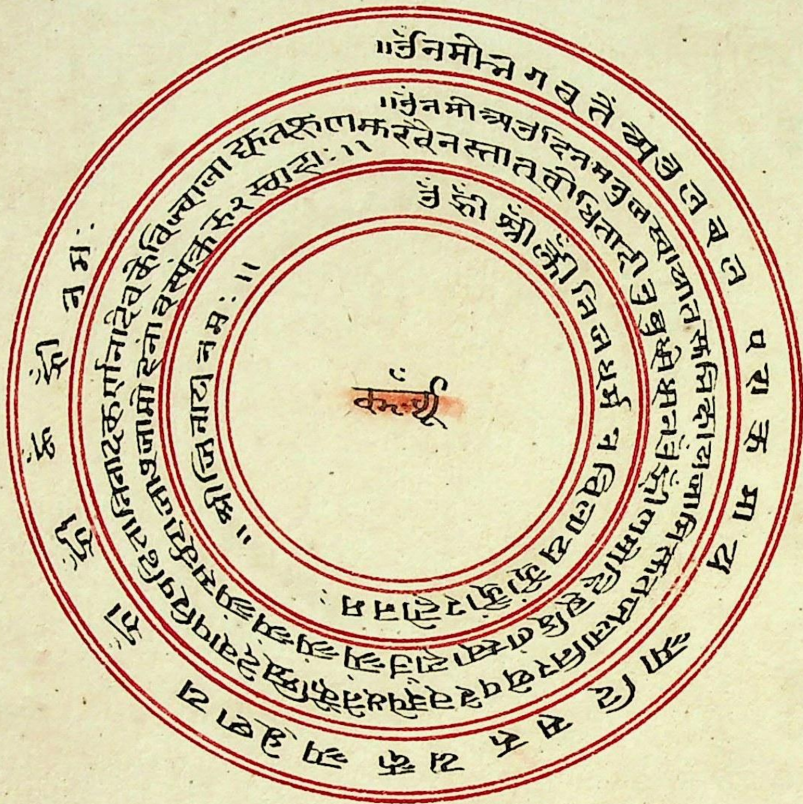
दृष्ट्वा भवंतमनिमेषविलोकनीयं नान्यत्र तोषमुपयाति

संतोषन पांम इकिमजेतिहां दृष्टांतेकहइब	हे नाथ पीत्वापय कहतां जिमषीरसमुद्रनउपां णीपीइनइ दिणपांणीकेइ दवन बइसंइ मानाकि रणसरीषोउजलो वइणतावतावीरसमुद्रसूरी

जनस्य चक्षुः । पीत्वा पयः । ससिकरद्युतिदुग्धसिंधोः पांणीनेइ नइ षीरतो हे स्वांमी श्री मानतुंगसूरि कहैइ क्षारजलप तावता मादा षारीजलि पिणकेइ बउलवलासमुद्रनो पांणी जांणीसा षातलपणधी त्यासरीषोते पांणीदीधांनणीक्रलवांइ वइअपितुकी

क्षारंजलंजलनिधेरसितुंकइछेत ॥११॥ इनवांवइ ११

॥अथ एकादसकाव्यविधिलिख्यते। अथऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्ते यबुद्धिणं। अथमंत्र ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रां श्रूं कुमतिनिवारणी महामाया यैनमस्वाहा। अथयंत्रस्वना एकादसदलयंत्रंकृत्वा। तन्मध्ये ऊँ ह्रीं स्याणते ॐ ह्रीं क्लीं श्री भक्तिरुपायनम। बलिदत्वा पश्चां तत्रऋद्धिमंत्रे ण वेष्टयेत तदुपरि ॐ नमो भगवते सिद्धरूपभक्तियुक्तं सां सीं सौं ह्रीं ह्रूं क्रौं नम एवं मंत्रेण वेष्टयेत अयं एकारेण यंत्रंकृत्वा अथवि धिएकाव्यपढिवाथकी एवाऋद्धिमंत्रजपिवाथकी यायंत्र पासरा षवाथकी आकर्षणहोय पवित्रकपडापहरस्नानमंजनकरि महापवित्र होयदीपधूपनैवेद्यफलउपषाकरिश्सन्नहोयसवेद मालासूजापकीजे वार१०८ जिदिनेजीनेवुलायोचोहै आवेएम काव्यपढिवाथकीवाऋद्धिमंत्रजपिवाथकीयंत्रपासराषीजेफल होइइति एकादसमाकाव्यसंपूर्णम॥११॥श्री॥ ॥ ॥श्री॥ ॥



अहो श्री युगादिदेवजी एशांत रागरुचि उपसमी वेराग है भजे हथकी ए इंछइ | परमाणुये करी तुं रूड़ी जिन निर्मायित कु हतां नी पजावास पिणजग वेतके द रा वइती न लोकसर्ग १४ तु २ पाताल

यैः सांतरागरुचिभि। परमाणुभिस्त्वं निर्मापितस्त्रिभुव

नातिलक समान व इ: | तावंत एव कहतां ते लगनि क्षयकरी नेइ ते परमाणु आ पृथिवी न इ विषइ तितरा हिज ऊ वाजाणी येवइ ते किम जिणकारणइ निपजइ करी नइ :॥

नैकललामभूत। तावंत एव खलु तेप्यणवः पृथिव्यां।

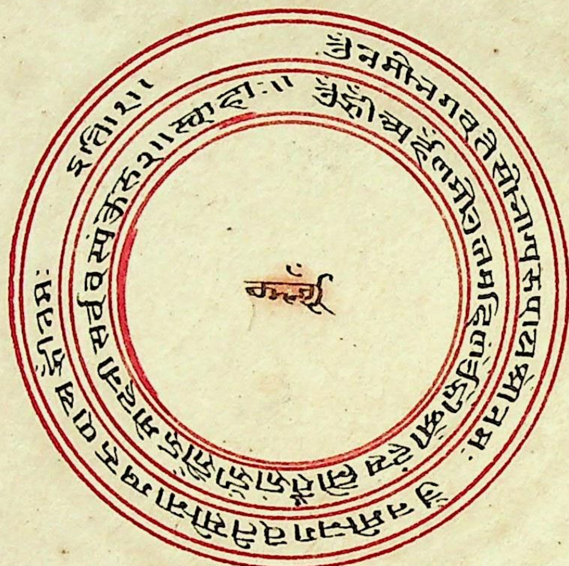
अहो स्वामी तुम्हारा सरीखउ बीजउ रूप संसारमइ कोइ नही वइ १२

यत्ते समानमपरं। न हि रूपमस्ति: ।१२

॥अथ द्वादसकाव्यानि अथ ऋद्धि ॐ नमो अरहंत दिनमकज स्वाया तम्हि स्तं जोमि श्रुतजलानिरथेपरे वसोधनेके ख्रिदेवतापरए टि तानि नादकर्णनादेव किज्वालघु स्थूल फरे वस्तान वोधितादीनु वा धीक्षन ॐ ह्रीं णमो दिव्यबुद्धिणं स्वाहा अथ मंत्र ॐ ऐं ऐं ऐं ऐं सर्व राजा प्रजा मोहनी वुंपकुरु २ स्वाहा अथ यंत्र षोडसदलं कृत्वा मध्ये कलूं ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं निजधर्म न चिलायक्रौं क्रौं २ [illegible] होनम स्वाहा जिरवीते वलिंदत्वा पश्चात् तदुपरि ऋद्धिमंत्रेण वेष्टयेत् तदुपरि ॐ नमो भगवते अतुल बल पराक्रमाय आदिसरुदाक्षं अधिष्ठाय क्रौं ह्रीं ह्रूं फं नम मंत्रेण वेष्टयेत् अयं पुष्कारेण यंत्र कृत्वा अथ विधि ए काव्य एहि गाथकी वाऋद्धिमंत्र जपिवाथ की यंत्र पास राषवा थकी हस्ती को मद उतरै वार १०८ ते जलेन मंत्र जपेतो कार्यसिद्धि इति द्वादसमा काव्य १२

॥अथत्रयोदसकाव्यजंत्र।१३।

ॐ नमो अट्ठसि द्धिक्रौं ह्रीं



ह्रीं ... भुक्ताय नमः

श्रीमांनतुंगसूरिकहेंछे अहो श्रीजुगादिजिन्हा ऋषभजिणेजीती
रो ऋषभकेहइ तुम्हारउ देवतामनुष्यनागकुमारना॥ वइतीनलोकनी
नेत्रनो हरणहारवलीकेहवो वइजगवंतनउ उपमाए हवीकांइ
वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि॥ निःशेषनिर्जितजगत्त्रि
वस्त्रनउ बइजेनगवंत इंऋषभनइ अहो स्वामी तेचंद्रमंडलकलं
नाऋषभथकी बरस्रबरि कसहितस्यांमनी लजिणाकारणथकी
वलीचंद्रमांनीउपमाव दीसरदिवसनइसमइपांडवइं
तयोपमानं। बिंबं कलंकमलिनं क्व निसाकरस्य यद्वासरे
पीलरीपीला पलासनां पानसरीषो हुइ अनइ जगवंतनो ऋषभ
मद्यावजलनिर्मला १३
भवति पांडुपलासकल्पं:।१३

॥अथत्रयोदसकाव्यऋद्धिमंत्रयंत्रविधिविधांनलिख्यते अथऋ
द्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो जमदीणं अथमंत्र ॐ ह्रीं श्रीं हं सः ह्रौं ह्रां ह्रीं द्रौं
इमो हनीसर्वकार्यकृत् २ अथयंत्रस्वन्न क्ल्व्यूं यंत्रमध्येलिखित ॐ
नमो भगवते सौभाग्यरूपाय श्रीं नम को इकामध्येलिखित तदुपरि ऋ
द्धिमंत्रेण वेष्टयेत ॐ नमो अट्ठसिद्धि ह्रीं क्रौं ह्रीं क्ल्व्यूं भुक्ताय नमः श्रीं अ
नेन मंत्रेण लिखित अथविधि एकाग्रपढिवाथकी वाग्रंत्रजपिवाथकी
वायंत्रपासराषवाथकी वार १०८ को करी ७ सात मंत्रीवोगरदा फिरे
तो चोरचोरी करवा न पावे राहवाटमे किणही रीतनय उपजे नही

इति श्रीत्रयोदसकाव्यऋद्धिमंत्रयंत्रविधिविधां
नसंपूर्णम्:।१३।

॥अथ षोडसमा काव्य यंत्र रचना १६

ॐ ह्रीं अर्हं चउदसपुव्वीणं ॥

ॐ ह्रीं जयाय नमः ॥

ॐ नमः सुमंगला सुसीमा देवे दी सर्व

ॐ क्लीं विजयाय नमः ॥

ॐ ह्रीं मां मानस्तंभाय नमः ॥

कुरु कुरु स्वाहा इति मंत्र ॥

क्लीं

द्विवइ भगवंत तनइ दीवा थकि पिण अधिक करी वखांण इवइ सा तु दीवउं धूमइ करी रहित वाति करी वर्जित तैलपूरइ वर्जित एहवो स्वभाव नो दीवो घरनइ विषइ उद्योत करइं अनइ भगवंत तीनजगत विषइ उद्योत करइं निर्धूमवर्त्तिरपवर्जिततैलपूरः कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां ॥ वली एह भगवंत रूपी यो दीवो पवन थकी ओलायइ नही क्योंनक्का वइं वली जिणइ पवनइ चलपर्वत चलाया वइयाहवा पवन थकी गम्य हेयक गादि देवउ म्हे अपरदीपक जगत तीन लोकनइ विषइ प्रकास नाकरणहार १६

दीपोपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाश १६

॥अथ षोडसमा काव्य विधि विधान लिखते अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदस पुव्वीणं अथ मंत्र ॐ नमः सुमंगला सुसीमा देवी सर्व समीहितार्थ सर्व विघ्नं खला कुरु कुरु स्वाहा अथ मंत्र रचना क्लीं पूर्वं ॐ ह्रीं जयाय नम अयं लिखेत दक्षणे ॐ विजयाय नम उत्तरे ॐ ह्रीं अपराजिताय नम पश्चिमे ॐ ग्लौं मानस्तंभाय नम चउ दिस लिखेत पश्चात ऋद्धि मंत्रेण वेष्टयेत अयं प्रकारेण यंत्र कृत्वा सर्व नयन सनं राज द्वारे जयं भवति अथ विधि एक वार पवित्र थकी ऋद्धि मंत्र जपि वाथकी यंत्र पास राखवा थकी वार १०८ पढि दरवार मे जाजे सन्नाम कूंपो न पडे अर सत्रु जय मिट जाय राजद्वार मै जय होय इ

तिश्री षोडसका व्य ऋद्धि मंत्र विध विधान संपूर्ण मा १६॥

॥अथ सप्तदस काव्यमिदं॥१७॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगमद्दाणिमिति

कुसलाणं: अथ यंत्रमंत्र ॐ नमो णमिऊण अट्टे

मट्टे क्षुद्रविघट्टे क्षुद्रान्स्तंभय२

रक्षय२ स्वाहा: इति मंत्र:॥

ॐ	न	मो	अ
थ	क्रु	रु२	जि
ज	ह्राः	स्वा	त
रा	१	३	ह्ना

हिवै श्रीमानतुंगसूरिश्री ऋषभदेवनइ सूर्य थकी अधिक करी वर्णवइ छइ ए सूर्य आथमइ स्वामी अस्तनपामइ वली सूर्यनइ राहु ग्रसनइ न गवंतनइ राहु ग्रहीन सकैं वली श्री आदिदेवरूपीयो सूर्य कि।

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः। स्पष्टी करोषि सहसा

दवोर्वे सहसा समकालएकज
वारजगतत्रीनलोक स्वर्ग१म
र्त्य२ पाताल३नइ प्रगट करइं

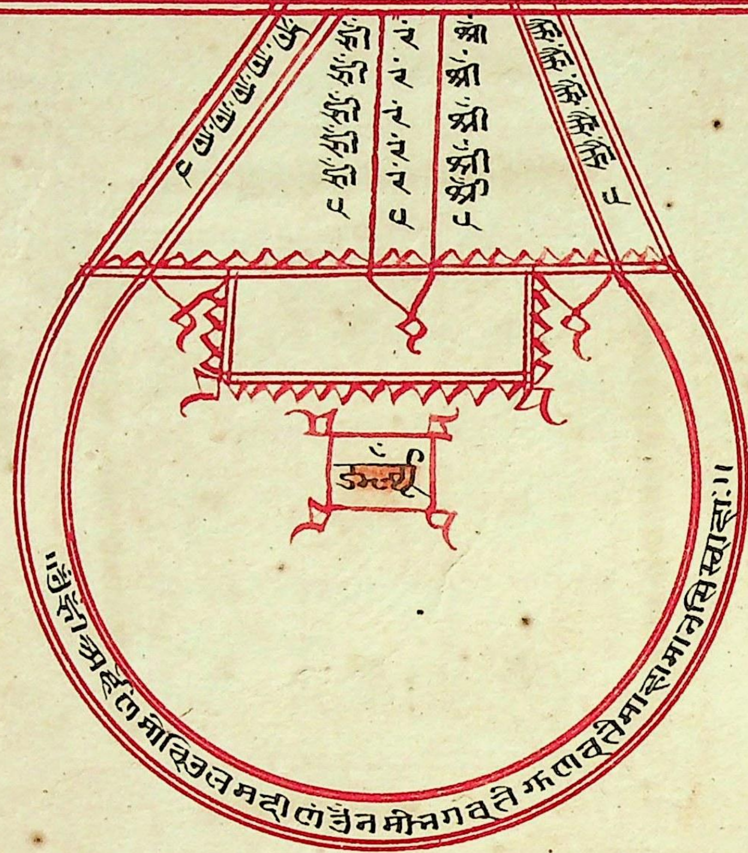
वलीभगवंत सूर्य अंभोधरजेमेघनै
समूहे रूंधीन जाइ य महाप्रभा व
जेहनो एहवो मोटउप्रभाव छइ व

क्रुगपन्ति जगंति। नांभोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः सूर्यातिशायिमहिमासि मुनींद्र लोके १७

लीइणहीजकारणे अहो श्रीऋगादिदेव अहो मुनीइवि(?)लोकनइ विषइं सूर्य थकी अधिकी महिमा तुम्हारी वर्त्तइ छइ त्रीन लोकनइ विषइं॥१७॥

॥अथ सप्तदसकाव्य ऋद्धिमंत्रविधिविधानलिख्यते अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगमद्दाणिमिति कुसलाणं अथ मंत्र ॐ नमो णमिऊण अट्टेमट्टे क्षुद्रविघट्टे क्षुद्रान्स्तंभय२ रक्षय२ स्वाहा अथ यंत्र स्वना वउरप्रभावोइ सेकार्यतन्मध्ये ॐ नमो अजित सत्रुपराजय कुरु२ स्वाहा अयं अक्षरं लिखित पश्चात ऋद्धिमंत्रेणवउर्दिक्षु वेष्टयेत अयं अक्षरेण कृत्वा संतान रूक्षेन वति एका व्यपदिवा थकी मंत्र जपिवा थकी यंत्र पास राषवा थकी अछतो पांणी वार २१ मंत्री पाइजे पेट की पिडा मिटे असाध्यपेटकी पीडा जायइ इति सप्तदसकाव्य ऋद्धि मंत्र यंत्र विधिविधान संपूर्ण॥१७॥

॥अथ चउदस काव्य यंत्र॥१४॥



वली कहइ बहु पूर्णमासी नउ ससांक चंद्रमा नी तिहनी कलानउ कलाप समूह ते सरीषा॥ शुभ्रा कहतां उज्वला गुण तेहना त्रिभुवन नइ लोक ते लंघइ

संपूर्णमंडल शशांक कला कलाप। शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयंति॥ ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं। कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टं॥१४॥

इ व्यापइ आश्चर्य महइ ते गुण उल्लास्यान इ आ आया हे त्रिजगदीश्वर त्रिलोकनानायक तिया गुणान इं स्वेच्छा ५ णी स्वेच्छाये विचरतां नइ कुण निवारइ ए लइ को इ वारी न सकइ॥१४॥

॥अथ चउदसमा काव्य नौ ऋद्धि मंत्र यंत्र विधि आम्नाय लिख्यते॥ अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं॥ अथ मंत्र ॐ नमो भगवते गुणवति महामानसी स्वाहा॥ अथ यंत्र रचना ऊर्ध्व त्रिकोण यंत्र मध्ये लिखवें तद ऊपरि पंच॥५॥ ॐकार लिखिता यपंच ५॥ ह्रींकार उत्तर ए तीये पंच॥५॥ श्रींकार स्वर्णपंच ५ क्लींकार पंच ५ रंकार पंच ५ तदुपरि ऋद्धि मंत्र वेष्टयेत अस्य प्रकारे ण यंत्र कृत्वा यंत्र क्षमावान संपूर्ण जलनी त्रिसंध्या आपदि गुण आधकी ऋद्धि मंत्र जपियां थकी यंत्र ण सरा मरा थकी ना मरी वधड़ी रे अंध कार आदे नदी वार २१ काकरी ७ मंत्री सांमी होय ज्या रुदी सकी सा लिहीय सूत्र को जय कदे इनकइ जे नाना प्रकार राजल की लक्ष्मी की प्राप्ति

होइ इति चउदसमा काव्य संपूर्णं॥

॥१४॥

॥अथ १५ नरमा काव्ययंत्रमिदं॥१५॥

ॐ नमो अवितबलपरा

ॐ ह्रीं अर्हं णमो

ॐ	अ	व
म:	ह्र्यूं	ति
य	क्र	व

इहां देस्वामी किसी आश्चर्यकह तां देवता ते हनी अंगनास्त्रीए ॥ तावता देवांगना एपिण तुम्हारो मनचित्तलिंगारमात्रविकारमा
त्रिं किमत्र यदि ते त्रिदसांगनाभि । नीतंमना गपिमनो नवि
ग्रॅनइ विवइनतीक्षी मस्त्रिरश्रुतरस्वोइ हांद्ट शंतकुदबइं ॥ कल्पांतकइतांप्रलयकालनी वायरो तीये चलाचलइ च्यचलपर्वत जेह्वे तेपिण जितो चलाया हे एहवे प्रलयकालनै पवनै ।
कारमार्ग । कल्पांतकालमरुत्ताचलिताचलेन । किंमंदरा
कांइ मेरुगिरिनो सिषरकदापि कांइ चलायो नचली सकइ इमजग
वंतनउ मनपिण देवांगना कदाचित्स्वलावीस
इकइ नहि १५
द्रिसिखरं चलितं कदाचित ॥१५

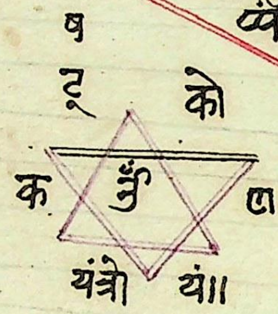
॥अथ पंदरमा काव्य विधि आथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीणं अथ मंत्र ॐ नमो भगवति गुणवति ससिमा पृथ्वी सर्व वजुं अं स्वजां मानसी मा हा मानसी स्वाहा अथ मंत्र स्वनां यंत्र मध्ये ह्र्यूं ॐ अपति लक्षायम को स्त्रकमध्ये अयं अक्षरं लिखितपश्चात ऋद्धि मंत्रेण वेष्टयेत पूनव जिदत्ता ॐ नमो अचितबलपराक्रमाय सर्वार्थ कामरूपाय ह्रीं ह्रीं क्रौं श्रीं नम अनेन मंत्रेण यंत्र वेष्टयेत सौभाग्य वर्द्धयति अयं प्रकारेण यं त्र कृत्वा अथ विधि एकाव्य दिवाथकी वा ऋद्धि मंत्र जपिवा थकी यं त्र पास राखवा थकी सोभाग्य वधे लक्ष्मी की प्राप्ति होय वा स्व ३ तेलमं त्रीदा थकं मुख उपर फेरीजे अरुफगमे फाटे राजदरबार मे बोलता ॥
ज्ञानोदयइति १५ काव्य संपूर्णम् ॥

॥८०॥ इं द्रमंत्र प्रतिदिनं १०८ रूप तेर क्तवास: परिधानं रक्त जप श्रक राजा पूजा रामादिवस्त्रपं: पीतवासं परिधान पीत जप श्रक तदा संता न दृधि: पूजा वस्त्र रामा प्रोक्त स्वेतवास: श्री परीधानं क्तघ्न जंयत्र क तदा शत्रुक्षय: २४००० सहस्र जापानं तरं होम विधि: तत्रगजैक पूमाण भूमी शोध्या अस्थिनष केश्र

शैक्ता निवृत्ति: पश्चात्सुवर्णपानी येन भूमि प्रक्षालनं ब्राह्मणेन भूमि प्रतीष्टा कारा प्यव आक

ट कोण कुंड: कारा प्यं वंदिर काष्टानि रक्त चंदनका वास्तुं: वांम: क प्येटमालिके

प्यं टपट्ट कुलमूगी: रमूलगूणजकेसर



मिश्रितबरामराजानश्रुचे

पासाष जबादिदिंग जूमूरव वस्तुनि

सर्वोषट् ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं तपिकु णपा। कणवीरगूलीगूजीलपुष्पादि होमस्तदा

थि सविमतस्वसद्धे जीणकुली राजादिवस्यंपीनवस्त्रपीतपट्टकुलम

ॐ ह्रीं श्रीं नम श्री मालिक चंदन अगर केसर मिश्रितघृत

मलयागीरीमालिके शीघ्रतिहो

वंकुंयतेपूर्वोक्तिमूरवसनपूर्वेन वदत्या मपीतवस्त्रनां तदामंताव

याति: कृष्णइकुलकसुरीचु आ अगरकृष्णधत्तुरका वधीपूजावस्त्र।

शानिगूजीरक्तवस्त्रं तमालपत्राणि पश्चिमायादि शीकुंयते शत्रुना लक्ष्मीपा

स्यन्ना: महास्तानं विधायकृतोपवासमनं त्रिधा प्रुतवाने गृहैक देसे होम करोति तस्य:

मक्ष्यवस्तूतामिति: +धीस्व श्वेतवस्त्राणि हीरानं श्वे

॥ह्लैं ह्सौं ह्र्फ्रौं ह्मों नम:॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं वस्तीवस्तिनिरोधयस्वाहा॥ तपट्टकतगोपीचंदनकपुरा

वार८॥: दिजे:

२

२८

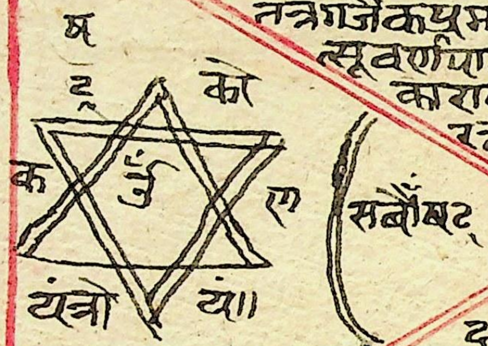
परिणाम	जीव	मूर्त्त	सप्रदेशी	एक	क्षेत्री	क्रियावंत	नित्य	कारण	कर्त्ता	सर्वगत
भेद २	१	१	५	३	५	२	४	५	१	१

॥ ५ आद्य इदं मंत्र प्रतिदिनं १०८ जपेत रक्तवासः परिधानं रक्तजपमाल करा जा प्रजा रामादि वि
रूपः पीतवासः परिधानं पीतजपमालकत दासत्तान वृद्धिः प्रजा वश्य रामा प्राप्तिश्वेतवासः
परीधानं कृष्णजपमालकत दारिद्र्यक्षयः २४००० सहस्र जापानंतरं होम विधिः
तत्र गजकेशर प्रमाण स्नान धान्यासि नषकेश रोगानि वृत्तिः पञ्चो
सुवर्णपानीयेज समिश्र कालनं वा लूणनं मिश्र तीष्ट
कारायषट् कोणे कुंडकारा पंच बद्रिर काष्ठानि
रक्तचंदन का वा प्रसु वाम कर्पूर ५ पंक
नमुद्रीः

॥ उँ ह्रीं श्रीं अर्हं तपि करण पार्श्व विम
तरव सदेजी लयुकु लीग ह्रीं श्रीं नमः श्री

चक्र यते पूर्वा लिमूर्खस नपूर्व
दत्वा यातिः रुष्ण कुलक सुरीचु
रक्त ध्वजर का ष्टा निगूली रक्त वस्त्र तमा
ल पत्राणि पाश्चि माया दिशि कुंडं तेषां नासपरः म
ल स्नानं विधाय कृतो पवास मनं त्रिधा व्रत वा नगदे कदेसे
होम करोति तत्वः तत्थवस्तुना मितिः श्री गणिमनोरथ दल लिखीतं ॥

कर्पूर
नाल के
र गूगल गू
ल केसर मिश्रित
व राम राजा नश्या
षा साषज बादि हिं गद्र
प्र मूरख व स्तु निकण वीर
गुली गुली लपुष्पा दि होमस्त
दा राजा दि वश्यं पीन व स्त्र पीत
पद्ध कुल मंग लिक वंद नश्राग
र केसर मिश्रित घृत मन
यागी री तालिकेरी प
नृति होम पीत व
स्त्र तदा
ता नव धी पुजा वश्य
ल ही पापी स्कृ
तव स्त्री गिरीरा नर्भे
तोपद्द कलगो पंचंदन को
पुराद्धिजे:



(सर्वौषट

॥ ह्रीं क्लीं हसौं ह्लौं नमः ॥ उँ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं वस्तीं वस्ति निरोधय २ स्वाहा ॥ वार ७ ॥

परिणाम	जीव	मूर्त्त	सप्रदेशी	एक	क्षेत्री	क्रियावंत	नित्य	कारण	कर्त्ता	सर्वगत

३

...गाथासमाप्ता

परिणाम	जीव	मूर्त्त	सप्रदेशी	एक	क्षेत्री	क्रियावंत	नित्य	कारण	कर्त्ता	सर्वगत
भेद २	१	१	५	३	५	२	४	५	१	१
जीव १ पुद्गल २ परि०	जीव १	पुद्गलमूर्त्त १	धर्म १ अ२ आ३ पु४ जी५ सप्रदे	ध१ अ२ आ३ ए३ एक	ध१ अ२ पु३ का४ जी५ क्षेत्री	जीव १ पु२ ए२ सक्रिय	ध१ अ२ आ३ का४ नित्य	ध१ अ२ आ३ काल४ पु५ ए५ कारण	जीव १ कर्त्ता	आकाश १ सर्वगत
अपरिणामी	अजीव	अमूर्त्त	अप्रदेशी	अनेक	अक्षेत्री	अक्रीय	अनित्य	अकारण	अकर्त्ता	असर्वगत
४	५	५	१	३	१	४	२	१	५	३
ध१ अ२ आ३ का४ ए४ अपरिणामी	ध१ अ२ आ३ का४ पु५ ए५ अजीव	ध१ अ२ आ३ का४ जी५ ए५ अमूर्त्ती	काल १ अप्रदेशी	पु१ जी२ का३ ए३ अनेक	आकाश १ अक्षेत्री	ध१ अ२ आ३ का४ ए४ अक्रिय	जी१ पु२ पर्याय अपेक्षाई अनित्य छे	जीव १ अकारणी	ध१ अ२ आ३ का४ पु५ ए५ अकर्त्ता	ध१ अ२ आ३ का४ पु५ ए५ असर्वगत

परिणामजीवमुत्तं सपएसाएगखित्तकिरियाय निच्चंकारणकत्ता॰ सव्वगयमिदरहियपवेसो १ दुन्नि

यएगंएगं पंचयतीपंचदुन्निचउरोय पंचयएगंएग एगदसपयसुत्तरंएयं २ चउपणरइगत्ति

न्निय इगचउरोदुन्निइकपणरगं परिणामीयरंभेया बोधव्वासुबुद्धीहिं ३ इतिषड्द्रव्यविचार

णगाथासमाप्ता

॥ लोकनुं मान असंख्याता योजन ॥ योजन ॥ प्रतें असंख्याता अंगुल ॥ ॥ अंगुलें ॥ असंख्याता प्रतरजा ॥ प्रतरे ॥ अ

॥ प्रमाण ॥ णवा

॥ लोए असंख जोयण ॥ माणे पइ जोयणंगुला संखा ॥ पइ तं असंखंसा ॥ पइ अ-

संख्याता गोला ॥ ॥ १ ॥ ॥ गोले २ असंख्याति निगोद ॥ निगोदे २ अनंता जीव ॥ ॥ जीव ॥ प्रतें अ

सम संखया गोला ॥ १ ॥ गोलु असंख निगोउ ॥ सोणंतजीउ जीअं पइएसा ॥ असंख

संख्याता प्रदेश ॥ ॥ प्रदेशे ॥ अनंती कर्मनी वा ॥ २ ॥ वर्गणाइं वर्गणाइं अनंता ॥ प्रतरें ॥ अनंता अणु लागा अ

॥ गणा ॥ प्रतर

पइ पइ पएसा ॥ कम्माण वग्गणाणंतु ॥ २ ॥ पइ वग्ग अणंता ॥ अणु पइ अणु अणं

ए लागे २ अनंता ॥ ॥ एहवुं लोकनुं स्वरूप ॥ तावतुं श्री जिनेश्वरनुं तद्वत्ति करीने ताप्युं ॥ ३ ॥ इति लोकस्वरूप गाथा: ॥

॥ पर्याय ॥

तपज्जाया ॥ एवं लोगसरूवं ॥ ताविक्कइ तद्दत्ति जिणवुत्तं ॥ ३ ॥ इति सिद्धांत गाथा:

॥अथ सैंतालीसमा काव्य यंत्र॥४७॥

अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो व

ड्ढमाणाणं मंत्र ॐ नमो

न	न	न	न	न	न

न	ॐ	न	मो	भ	न
न	ग	व	ते	गु	न
न	ण	भ	द्रा	र	न
न	या	य	न	मः	न

न	न	न	न	न	न

ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः यः क्षः ह्रीं

क्रूं फुट् स्वाहा इति मंत्रः॥

मत्ताधिपेंद्र मृगराजदवानलाहि संग्रामवारिधिमहोद रबंधनोत्थं। तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते॥४७

अथ अष्टभयं नाम माताहाथीनो भय टलइ १ सिंहनो भय टलइ २ दावानलनु भय टलइ ३ सापनो भय टलइ ४ संग्रामनु भय टलइ ५ समुद्रनो भय टलइ ६ मोटा रोग उपसमइ ७ माहा बंधन बंदीखाना थी छुटइ॥

ते मनुष्य ना ए आठ भय माहा मोटा बीहामणा वेगा उपसमइ जाणे करी भय इ जकरी नइ॥

हे जिनेंद्र जे मतिमंत मनुष्य म्हारो कीधो स्तव सरना मास्तो अनली परइ भणइ भणइ॥४७॥

॥अथ सैंतालीसमो काव्य लिख्यते अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं अथ मंत्र ॐ नमो ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः यः क्षः ह्रीं क्रूं फुट् स्वाहा अथ यंत्र स्थापना उपरि षोडस कोष्टकं कृत्वा ॐ नमो भगवते गुणभद्राय नमः अयं अक्षरं यंत्र मध्ये लिखेत् तदुपरि चतुर्विंसति २४ नकार वेष्टयेत् पश्चात् ऋद्धि मंत्रेण वेष्टयेत् अथ विधि एकाग्र पदि वा पकी वा ऋद्धि मंत्र जपिवा थकी वा यंत्र जन थकी वार १०८ पढीजे और असवार रूजै देस साधन कीजे बैरी वस होय वेरू कवर बी गोली घा वलागे नहीं इति सैंतालीसमो काव्य संपूर्ण ॥४७॥

॥ अथ बियालीसमो काव्य यंत्र ४६॥

अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायाणं

ह्रैं ह्रैं ह्रैं ह्रैं ह्रैं ह्रैं

श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं

ॐ नमो ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रौं

स्वाहा: इतिवृद्धिमंत्र ॥

आपणकहतां पगथीलेइनइकंठगलातां घणाभारसहित जेसांकलि तियांनी वलीमाहनिविहसांकलीघणीमोटीबेडी टेंबी छै अंगसरीरजे मनुष्यनउ ॥ अवेली ॥

आपादकंठमुरुशृंखलवेष्टितांगा। गाढं बृहन्निगड

करीगाढीकदर्थनापामीछेइ जंघाकहतासाथलिजे मनुष्यनीएहवै इवंदीवानइपण्यामनुष्यतु म्हारीनामरूपमंत्रनिरंतरस्मरताथका:

कोटिनिघृष्टजंघा। त्वन्नाममंत्रमनिसंमनुजास्मरंत

सद्यकहतांवंदीखाणोछुटइसर्वभयनीवारण: ॥४६॥

सद्यस्वयंविगतबंधभयाभवंति ४६

॥ अथ बीयालीसमो काव्य लिख्यते अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायाणं अथ मंत्र ॐ नमो ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रौं ह्रः ठ: ठ: ज: ज: क्षां क्षीं क्षूं क्षः क्ष्वीं स्वाहा अथ यंत्रस्थापना षट्कोणयंत्रकृत्वा श्रींकारमध्ये ह्रीं अयं अक्षर यंत्रमध्ये लिखेत् उपरलिंद त्वा ऐंकारचउविसति वेष्टयेत् तदुपरि ऋद्धिमंत्रेण वेष्टयेत् अथविधि एकावपढि गाथकी ऋद्धिमंत्रजपिगाथकी यंत्र पूजनथकी त्रिकाल पूजनकीजि वार १०८ नित्यजपीजै तो बंदीवाना सकूटै राजकोभयनहोय

इति बीयालीसमो काव्य सं

पूर्ण: ४६

॥अथ पैंतालीसमो काव्य यंत्र ४५॥

अथ ऋद्धि: ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहा

णसाणं ॐ नमो भगवते क्षुद्रोपद्रवशांतिकारि

णी रोगकष्टज्वरोपशमं

शांतिं कुरु कुरु स्वाहा:

	ह्रं	ह्रं	ह्रं	ह्रं	
ह्रं	ॐ	न	मो	भ	ह्रं
ह्रं	ग	व	ते	न	ह्रं
ह्रं	य	मा	स	ण	ह्रं
ह्रं	ह	रा	य	न्म	ह्रं
	ह्रं	ह्रं	ह्रं	ह्रं	

उपना बड भीषण भयानक रोइ जे जलो दरादिक रोग मोटो तेहनइ भारइ करीनइ कुब्जया वड:

सोचवनी क दसा पाम्या ब इठली छूटी गइ जीया नइ जीववानी आसा

उभूतभीषणजलोदरभारभुग्ना। सोच्यांदसामुपगता।

सुणजे हनइ एहवा महा मोटा रोग करिना थका

अहो स्वामी तुम्हारा चरण कमल निरंजतो हिज जाणें अमृत तेह अमृत संजे रोगी मनुष्य पोताना देही सींचइ रंज लगाइ

च्युतजीवितासा। त्वत्पादपंकजरजोमृतदिग्धदे

ते मनुष्यना रोग जावइ अनइ कामदेव सरिखा दिव्य सरिखा दीप्य रू प करि एकाग्रमणा थका सर्व रोग मिटइ।४५।

हा। मर्त्याभवंति मकरध्वजतुल्यरूपा।४५

॥अथ पैंतालीसमो काव्य लिख्यते अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण महाणसाणं अथ मंत्र ॐ नमो भगवते क्षुद्रोपद्रवशांतिकारिणी रोगकष्टज्वरउपसमं सांति कुरु २ स्वाहा अथ यंत्र स्नान चत्वरस्योपरि डस कोष्टकं कृत्वा ॐ नमो भगवते नम जीसण हरासन म यंत्र मध्ये अयं अक्षर लिखित अथ विधि एकाग्र पदि वाथकी ऋद्धि मंत्र यंत्र उपासरा पवण की माहात्म्य मीटे सर्व रोग जाय इति पैंतालीसमो काव्य संपूर्णम्: ४५:

॥अथ छत्रमाली समो काव्य यंत्र॥४४॥

अथ ऋद्धि ह्रीं अर्हं णमो मक्कर सव्वाणं

ॐ नमो रावणाय विभिषणाय

कुंभकरणाय लंकाधिपतये महा

बलपराक्रमाय मनश्चिंतितं कार्यं कुरु २ स्वाहा

हे जिनेंद्र संसार समुद्र ना तारक श्री र समुद्र वि | वली पाठीनपीठ
णते केहवो छइ भीम भयनामे बइ तिमिंगल करी भीषण | इम त्रक बडवा
कुंडां वीझामणा ते हमाइ जलचरजीव:

अंभोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र पाठीनपीठभयदो

एहवा जीवना समुद्र तेहनइ | वली किजतल माजे समुद्र ना तरंग
दीणहार वली उल्बण उत्कट | तेहना सिषरनइ अग्रभागइ
वडवानल नामा अग्नि बइ: | जाइ रह्या बइ जे प्रवाहण

ल्बणवाडवाग्नौ। रंगत्तरंगसिखरस्थितयानपात्रा।

कहतां जिहाज॥ | त्रास भय मुकीनइ सुखइ आपणइ गामे पुहचइ ते विण
स्वामी तुम्हारा स्मरणना प्रसाद थी एकाव्यार्थं।
एपांथ की समुद्र ना यटलइ ॥४४॥श्री॥

स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद्व्रजंति ॥४४॥

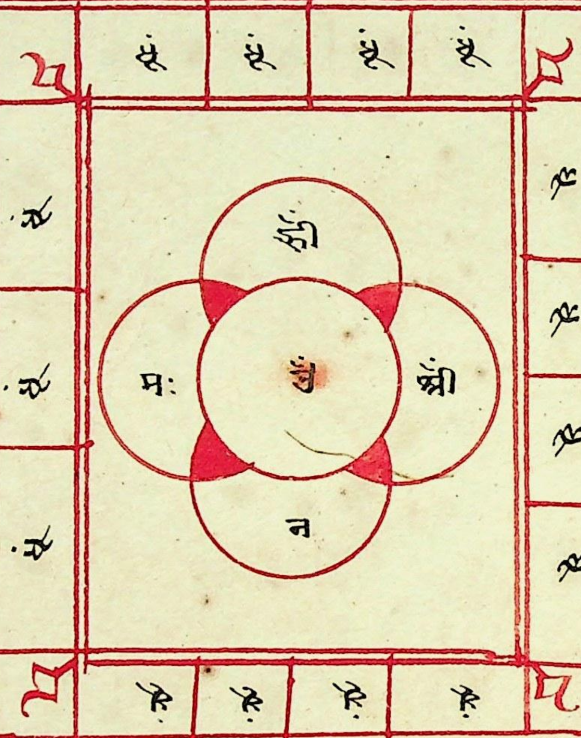
॥अथ छत्रमाली समो काव्य लिख्यते। अथ ऋद्धि ह्रीं अर्हं णमो
मक्कर सव्वाणं अथ मंत्र ॐ नमो रावणाय विभिषणाय कुंभक
रणाय लंकाधिपतये महाबलपराक्रमाय मनश्चिंतितं का
र्यं कुरु कुरु स्वाहा। अथ यंत्र रचना अष्टदलकमलकृत्वा तन्म
ध्ये ग्लौंकार अष्टदलमध्ये ह्रौंकार लिखित्वा तदुपरि ह्रींकार रवा
दसेन वेसष्टयेत् पश्चात् तत्क्रदिमंडलं वेष्टयेत्। अथ विधि ए
काव्य पढिवाथकी मंत्र जपीवाथकी यंत्र पास राषवा थकी आपदा
दूरे श्री रसमुद्रको भय नहीं होइ। इति छत्रमाली समो काव्य विधि वि
धानं संपूर्णम् ॥४४॥

॥ अथ तीयालीसमा काव्य यंत्रं ४३ ॥

भक्तामर

२२

ॐ नमो ह्रीं अर्हं णमो भक्कराणसव्वाणं



वली जे संग्राम नइ विषै कुंत कहतां बरछी
राअग्र वीधा छै हाथी ते हना सार थकी
लोही नो प्रवाह पडइ ते जाणी मेघ वरसइ छइ

कुंताग्रभिन्नगजसोणितवारिवाह । वेगावतारतरु

तीयइक रीनयन यंकरइं

एहवा जयं करं संग्राम नै विषइ जो कहइ करता जय
पामइ जे सत्रु जीपता दोहिला ते वयरी ना पक्ष न
इ जीपइ ते कुण जीपइं जे तुम्हारा चरण कमल

णातुरयोधभीमे ॥ युधेजयं विजितदुर्जयजेयपक्षा ।

जे मनुष्य नजइ सेवइ छै नर मनुष्य ते जय पामइ एका
चार्गिणंपां संग्राम जय पामइ ॥ ४३ ॥

स्त्वत्पादपंकजवनाश्रयिणो लभंते ॥ ४३

॥ अथ तीयालीसमो काव्य लिख्यंते अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो भक्कराणसव्वाणं अथ मंत्र ॐ नमो चक्रेश्वरी चक्रधारिणी जिनसासन सेवाकारिणी जिनसासन रक्षो पवन निवासिनी धर्म्म सांति कारिणि नमक्रू रू२ स्वाहा अथ यंत्र स्थापना पंच दल कोष्टकं कृत्वा तन्मध्ये ॐ ह्रीं श्रीं नमः अयं अक्षरं लिखेत् तदुपरि वलयं दत्वा पंचदस १० थंकारेण वेष्टयेत् तदुपरि ऋद्धिमंत्रेण वेष्टयेत् अथ विधि एकाव्य पदिवाथकी वा ऋद्धि मंत्र जपिवाथकी वा यंत्र पूजवाथकी । महाभय मिटै । अरु राज दरबार में वाकी प्रासिद्धि होय अरु युद्ध को भय न होय इति तीयालीसमो काव्यार्थ ।

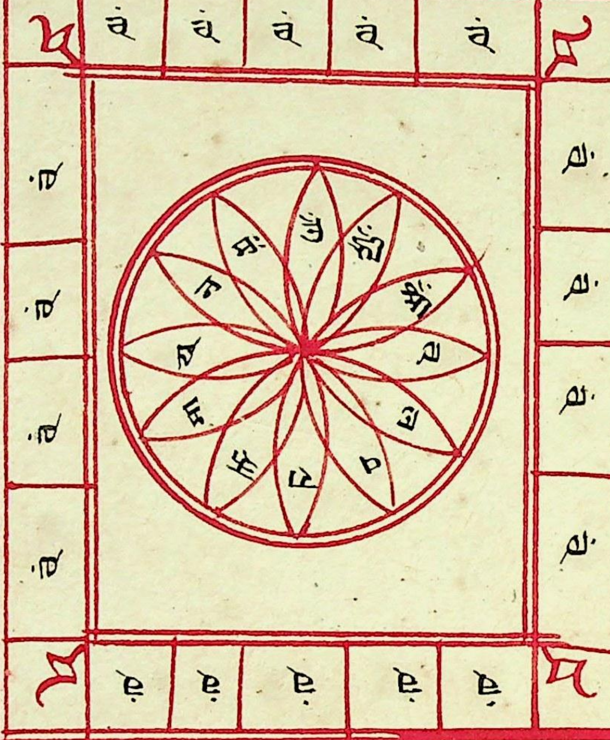
पूर्णम् ॥ ४३ ॥

नमो

२२

।।अथ बयालीसमा काव्यजंत्र ४२।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिन्नसोयाणं:



अथ संग्रामजे संग्रामनइ विषइ घोडानी हीसगजकहतां हाथीकहतां हस्तीरी गर्जारसहमोटाबीहामणानादवाजा: माजौ कहतां संग्रामनइ विषे वलसैन्य बलवंत जेह पति राजा नतेपिण तांजी

वल्गत्तुरंगगजगर्जितभीमनादमाजौ बलं बलवतामपि

जायइएतावतां पासइनासइजिकेमा कघत्रम्हाराजानाम उद्यणकरइ केहनीपरइ हा दृष्टांत कहइ छइ जिमसूर्यउदय सूर्यनइ किरणइ पर्मीजि मतिम अंधकार नासमहइ:।।

भूपतीनां ।।४१।। उद्यद्दिवाकरमयूखसिखापविद्धं

तिमत्रम्हारोनामग्रहणकीधे अतिबलवंतसैन्यकाटइतेविणनासइ ततकाल ह्रीजएकाव्यस्मरणथकां संग्रामजयकरइ ।।४२।।

त्वत्कीर्त्तनात्तमइवाशुभिदामुपैति ४२

।।अथ बयालीसमो काव्यजिणते।। अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिन्नसोयाणं अथ मंत्र ॐ नमो णमिऊण विसहर विसवणासण रोगसोक दोषग्रह कप्पदुमव्व जायइ सुहणामग्गहण सुहदे ॐ स्वाहा अथ यंत्ररचना चत्ररस छादसकोष्टकं यंत्रं कृत्वा तनमध्ये ॐ ह्रीं श्रीं बलपराक्रमाय नम अयं अक्षरं लिखित तदुपरि वलिंदात्वा वंकार अष्टादसेन १८ वेष्टयेत् पश्चात् ऋद्धिमंत्रेण वेष्टयेत् अथ विधि एकाग्रपदि गणकी ऋद्धिमंत्र जपिवा थकी गायंत्र पास राखवा थकी सबकोइ न उपन्याय महापराक्रम वधे वै प्रतापीक होय इति बयालीसमा काव्य संपूर्णम् ४२।।

॥अथ इकतालीसमा काव्य यंत्र॥४१॥

॥अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो ह्रीं रस बोलं

वज्रसंस्थित सिद्धिं देहि मनोवांछितं कुरु कुरु स्वाहा:

ॐ नमो श्रां श्रीं श्रूं श्रः जलदेवि

ॐ ह्रीं श्रीं आदि ह्रौं देवाय नमः

अथ सर्पभय निवारण सर्प केहवो छै रातो छै आंषि जेहनी मदसहित कोइल नागला समान अति स्याम वर्ण जेहनै वली ते साव क्रोध करि अती रीस करि बलता फणना फटाटोप करि वो क

रक्तेक्षणं समदकोकिलकंठनीलं। क्रोधोद्धतं फणिन

रिय हिवै मनुष्य ऐहवा जे सर्प जे मनुष्य आक्रमइ बिहुं पगां करि वि उद्योतवंत करवी मस लइ वली फाल वामणी उद्यमवंत करवै बे जे सर्प निर्भय थको वली दे श्री फणादि

मुत्फणमापतंतं। आक्रामति क्रमयुगेन निरस्त॥

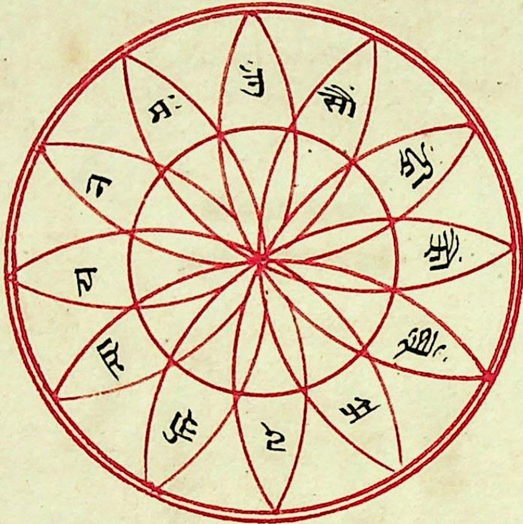
म्हारा नाम रूप नागदमनी जडी जे पूरुष नइ हिये इ करवे एक काव्य करण एथ कां सर्पभय टलइ॥४१॥

शंकस्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः॥४१॥

॥अथ इकतालीसमा काव्य० अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीर सवाणं अथ मंत्र ॐ नमो श्रां श्रीं श्रूं श्रः जलदेवी कमलपद्म ह्रद निवासिनी पद्मोपरि संस्थिते सिद्धिं देहि मनोवांछितं कुरु कुरु स्वाहा अथ यंत्र स्नानादहस्ताकारं यंत्रं कृत्वा तन्मध्ये अंगुष्ठे प ॐकार तर्जन्यां प ह्रीं कार मध्यमायां प श्रीं कार अनामिकायां प क्लीं कार कनिष्ठकायां प ब्लौं कार तन्मध्ये ॐ ह्रीं श्रीं आदि देवाय ह्रौं नमः अयं रूपे लाचे उलिखेत् तदुपरि ऋद्धि मंत्रेण वेष्टयेत् अथ विधि एकावन दीवाथी मंत्र जपिवा थकी यंत्र पूजन थकी राजद्वारमे जय होय और काव्य मंत्र सेती जल मंत्री दीजै तो सर्पका विष उतरै ने मिटै इति इकतालीसमा काव्य संपूर्णम्॥४१॥

॥अथ चालीसमा काव्य यंत्र ४०।

॥अथ ऋद्धिः ॐ ह्रीं अर्हं णमो काय वल्लीणं



अथ मंत्र ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रां ह्रीं सिद्ध सर्व

भय निवारणं कुरु

कुरु कुरु स्वाहा॥

अथ अग्निभय निवारण अग्निके ह्वी बइक | एतावता मह्यारा जोराव
ल्पांतकालकहतां अंत प्रलय कालने विषइ | रदावानल बलतो थ
इवायरइ करि नइ जे उबाली छे ते अग्नि | को ऊजलो ऊजल
कल्पांतकाल पवनोद्धत वह्नि कल्पं॥ दावानल ज्वलि
तो थको इस उदीस | जाणे विश्व कहतां जे सर्व जगत्र न अंदू
इके ह ठत्रे | एक रस्पइ एतावता सबनइ बालिस्यइ
एहवो दावानल सम्मुख आवतो देखी
तम् ज्वल मुत कुलिंगं। विश्वं जिघत्सुमिव सन्मुख
आहीं आपापि गांदिदे वत्रम्हारो जेनां मकीर्त्तिनेते हि जइ पाणी यइ
करी समस्त अगनि उपसमइ एकाव्य थकी अग्नि टलइ ४०।
मापततं। त्वन्नामकीर्त्तनजलं समयत्यसेषं॥४०॥

॥अथ चालीसमा काव्य ऋद्धि मंत्र यंत्र विधि विधान लिख्यते अ
थ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो काय वल्लीणं अथ मंत्र ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रां
ह्रीं सिद्ध सर्वभय निवारणं कुरु२ स्वाहा अथ यंत्र स्वना
दस दल कमल कृत्वा तन्मध्ये ॐ सौं ह्रीं क्रौं क्लौं संदर्सनाय
नम अयं अक्षरं लिखेत तदुपरि ऋद्धि मंत्रेण वेष्टयेल अ
थ विधि एकाव्य पढि गाथ की ऋद्धि मंत्र जपि वा थकी वार २१
पाणी मंत्री करी घर की चौफेर छांटदी जे अगन भय टलै इति
चालीसमा काव्य ऋद्धि मंत्र विधि विधान संपूर्णम्:॥४०॥श्री॥

॥अथएगणचालीसमाकाव्ययंत्रं३९॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिवल्लीणं ॐ नमो एभ

ॐ	न	मो	भ
ग	व	ते	भ
य	वि	ध्वं	स
ह्रां	ह्रीं	ह्रौं	श्रीं

एभुवर्द्धमानतवभयवर्तिहरहरति:

घ्या अतोनापरमंत्रनिवेदनास्वाहा

दिवेसिंहनोभयपिणतेकेहरीवडंजिन्नकुद | एहवाजेमोती
तांविदारया वडहाथीनांकुंभस्थलतिहांथीम | नासमकहपया
लन्नाकहतां रुधिरसूंवरण्याएया | वडतिणइक

भिन्नेभकुंभगलदुज्वलसोणिताक्तमुक्ताफलप्र

रीकरमिधरतीनिसोभा | एहवाजेसिंहफालभरतीमकथान
बडक्रमाकहतांसो | इपीतानापगमाहिआक्रमण
भादीसइवइः | करइजिणसिद्धं॥

करभूषितभूमिभागः बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधि

एहवोजेसिंहतुम्हाराचरणकमलनीसेवकजननइआक्रमइनहीं
एकावाणुफणणासीहनोभयटलइ३९

पोपिनाक्रामतिक्रमयुगाचलसंश्रितंते ३९ ॥३॥

॥अथऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिवल्लीणं अथमंत्र ॐ नमो एभुवृत्ते भुवर्द्धमानतवभयवृत्तंहरहरतिवर्णो एभुमंत्रावन २ समर्त्थ घ्या अतोनापरमंत्रनिवेदनास्वाहाः अथयंत्र स्वा नाचउर संपुष्पोइसको ष्टकाकृत्वातन्मध्ये ॐ नमो भगवते भय विध्वंस ह्रां ह्रीं ह्रौं श्रीं चायं अक्षर लिखित तदुपरि ऋद्धि मंत्रे लवेष्टयेत अथविधि एकावार पदिराप की वाऋद्धि मंत्रजपि वाथकी यंत्र पासराषवाथकी सर्प्पसिंहको भयनहोय इति एगणचालीसमोकाव्यविधिरिद्धिमंत्रसंपूर्णम्‌ः३९

॥अथ अडतीसमा काव्य यंत्रं ३८॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणिवल्लीणं

ॐ ह्रीं सत्रु विजय रण रणे ग्रां ग्रीं ग्रूं ग्रः नमः स्वाहा

ॐ नमो भगवते अष्टमहानागकुलोच्चाटनी कालदृ

ष्टिमृतकोत्थापिनी परमंत्रप्र

णाशिनी देवि शासनदेवते ह्रीं नमो नमः

अथ तो अष्टनय महाभय हरणा तिणइ अथ | मस्तकथी मदरालो

महस्तीनकभय १ मदथी करी नई झीनी वेइक | जीथकी माताजे

पोलकरतां क्रुद्ध स्थूल नजु मस्तकलजे हूनउ॥ | गजराजमा

श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल॥मत्तभ्रमद्भ्र

ताथकी क्रोधजी रचस | ऐरावणहाथी सरिखो उद्धतउत्कट

इं बधतो बइकी पजि | जोरइ करीनइं कुपामतउ थकाए

णइ हस्तीनइ॥ | हवो हाथीनइ

मरनाद विवृद्धकोपं ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं

देषीनइं नयनइं कदेइ पिण जेमनुष्य तुम्हारा आराधनरइं विषइ

सावधान बइ तिहां थी भयनि वारणउ ३८

दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम्॥३८॥

॥अथ काव्यानि : अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणिवल्लीणं

अथ मंत्र ॐ नमो भगवते अष्टमहानागकुलोच्चाटनी कालदृ

ष्टिमृतकोत्थापिनी परमंत्रप्रणाशिनी देवी शासनदेवते

ह्रीं नमो नमः अथ यंत्रस्तना षट्कोणाकार यंत्रं कृत्वा तन्मध्ये

ॐ ह्रीं सत्रुविजयरणरणे ग्रां ग्रीं ग्रूं ग्रः नमः स्वाहा :

...भूत्वा बलिं दत्वा तेन कृद्धि मंत्रेण वेष्टयेत् अथ विधिए

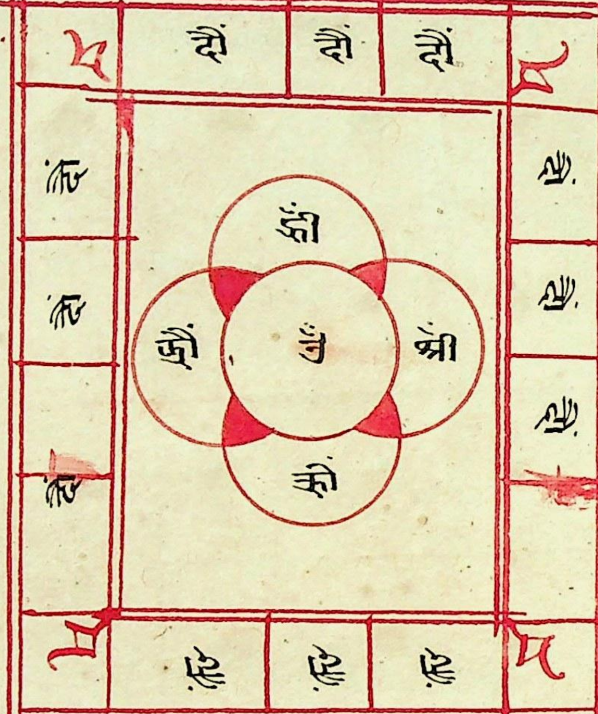
काव्य पढिवा थकी वा ऋद्धि मंत्र जपिवा थकी वा यंत्र पासरा

षवा थकी वक्रतर व्यथको संग्रह हो वह स्ती वस्य होय औ

रधनको लाभ होय इति अडतीसमो काव्य वि

धि विधानं संपूर्णम् : ३८ :

॥अथ सैंतीसमा काव्य यंत्र ३७॥



वली श्री मानतुंगसूरि कहइ छइ। अहो यक्षादिदेव इणइ प्रकारइ तुम्हारी विभूति सोभा होती हुई हे जिनेंद्र हे तीर्थंकर॥ धर्मोपदेसन कहतां वखाण समयइ जेहवी सोभा थइ ते

इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेंद्र। धर्मोपदेसनविधौ

तेवी हरिहरादिकनी बीजानी सोभा नहीं। इहां दृष्टांत कहै छइ जेहवी प्रभा कांति दिनकर कहतां सूर्यनी हुवै जिणइ करइ अंधकार सर्व मिटइ॥

न तथा परस्य। यादृक् प्रभा दिनकृत। प्रहतांधकारा॥

तादृक् कहतां तेहवी तेज ग्रहगण नागण कहइ तारा समूह विकसइ तोपिण तिसउ तेज न हुवइ॥३७॥

तादृक्कुतो ग्रहगणस्य विकासिनोपि॥३७॥ ॥ऽ॥

॥अथ काव्यनि आम्नाय ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं अथ मंत्र ॐ नमो भगवते अप्रतिचक्रे ऐं क्लीं ब्लूं ॐ ह्रीं मनोवांछित सिद्धि नमो अप्रतिचक्रे ह्रीं ठः ठः स्वाहा। अथ यंत्रस्थापना पत्र को एक गोलाकार यंत्र करवा। तदुपरि वलि दत्तादो कारहादसेन वेस स्थापेत। पश्चात् ऋद्धि मंत्रेण वेष्टयेत्। अथ विधि एकासण करि वाथकी ऋद्धि मंत्र जपिवा थकी संतुष्ट पास राखवा थकी वार २१ पाणी मंत्री आपणे मुख छांटी जैतो डर जन ओरव सिद्ध होय। दुष्टकी जीभ बंध होय। इति सैंतीसमो काव्य विधिविधान संपूर्णम्॥३७॥ ॥श्री॥

॥ अथ चतुस्त्रिंसमा काव्य यंत्रं ॥ ३६ ॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहिपत्ताणं

ॐ	श्रां	ह्रीं	श्रीं
क्लीं	ब्लूं	द्र	र
य	म	व	म
क्षौं	क्षीं	फ्रे	फः

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुंड दंड स्वामिन स्वाहा

२ आत्म मंत्रान् रक्ष २ पर मंत्रान् छिंद २ मम समीहितं कुरु २ स्वाहा हुं फट्

विकसता हेम सरवर्णा नाव कमल तिणरा समूहनी कांति सोभाजी यानइ ॥ समस्त प्रकार इक्रूलसता थकानवरामयूषकिरणतीयांरी सिषाइक

उन्निद्रहेमनवपंकजपुंजकांति पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाभिरामौ

रीअभिरामक हतां मनोहर छइ ॥ एहवा पादक हतां पग जिहां पगला हे जिननास्वामी तारे संचरणक मल जिहां धरइ ॥

पादौ पदानि तव यत्र जिनेंद्र धत्तः ॥ सिरता स्त्रिरामी

तिहां विबुध कहतां देवता पद्मानि कमल तिवारइ सोनारा कमल करइ तिहां इतिहांश्न माता नवा पग जाधरइ ॥ ३६ ॥

पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयंति ॥ ३६ ॥

॥ अथ बत्रीसमा काव्यानि अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहिपत्ताणं अथ मंत्र ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुंड दंड स्वामिन स्वाहा आगच्छ २ आगच्छ २ आत्ममंत्रान् आकर्षय २ आत्ममंत्रान् रक्ष २ पर मंत्रान् छिंदय २ मम समीहितं कुरु २ स्वाहा हुं फट् ।

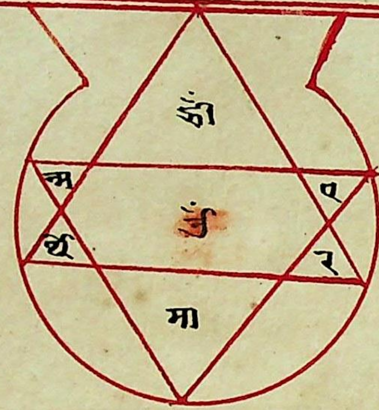
स्वाहा अथ यंत्र स्थनाषोडशकोष्टकायंत्र रंख्ररस्त्र कृत्वा तन्मध्ये अक्षर लिखितं ॐ ह्रां ह्रीं श्रीं क्लूं द्र र य म व म क्षौं क्षीं फ्रे फः वपश्चात् ऋद्धिमंत्रेण वेष्टयेत् अथ विधिए काव्य पढिवा थकी वाऋद्धिमंत्र जपिवा थकी यंत्र पास राषवा थकी सकल संपदा लक्ष्मी होय यंत्र पूजनात् जाप सहस्र १२००० रक्त पुष्पकरि यंत्र पूजनं तीरा जाम्हा रमे बोलवा लाहोय । नाना प्रकार की लक्ष्मी की प्राप्ति होय इति बत्रीसमा काव्य विधि विधानं संपूर्णम्ः

॥ ३६ ॥

॥अथ अष्टादसकाव्य १८

॥ॐ नमो सास्त्राव्युन वोधनाय परम

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउणयं तिना:



ॐ नमो भगवते जयविजय

अनेन मंत्रेण यंत्रं यंत्रकूरविध्वंसनाय ज्रौं ह्रीं नमः

मोहयं मोहयस्थंभयस्थंभय स्वाहा

करायस्फ्रांह्रींह्रौं श्रीनम:

ह्विवइ श्रीमांनतुंगनामआचार्यनमवतनोम्क बक्कमलवंइमाथक अधिककरीवर्णवइ छैति वंइमंडले अधारइकांनकुवइस्वांमिनि त्यउद | यदछैवलीविणासोछैवइ रूपअंधकारजिणक वलीमुषचंइमाकुवोंवि

नित्योदयं दलितमोहमहांधकारं ।।।। गम्यं न राहुवद ॥

रूपराहुनामक षनइअगम्यवलीअ वकर्मरूपीयामेघनइविणइगम्यबइं चंइमाराहुनइमेघनइपिणगम्यबइं | विभ्राजतेकइतां अहोस्वांमी इ णेकासरीतेउमहारीजेमुषकमल रूपीचंइमाथ्यणी कांतितेजवि

न स्यन वारिदानं ।।।। विभ्राजते तव मुख ।। ख्वाब्जमनल्पकां

राजमान सोभइबइं तीन जगतनइविषइउद्योतकरतउयकउमत संसा रमांहे अपूर्वचंइमंडलसमान स्वामीउमहारीमुषवव

सेवइ: १८

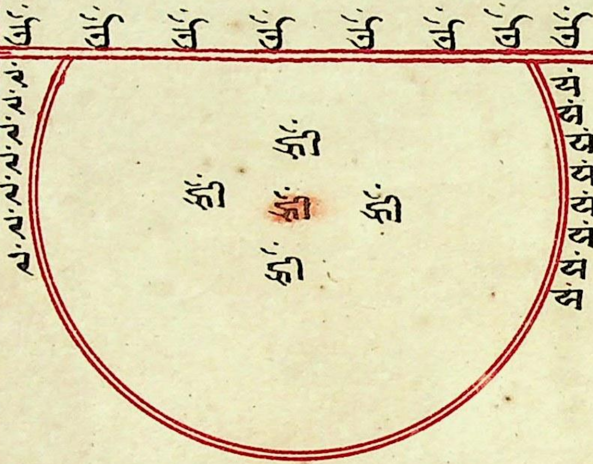
तिं विद्योतयज्जगदपूर्व ससांकबिंबं १८

॥अथअष्टादसकाव्य विधिलीषते अथऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउण यतियताणं अथमंत्र ॐ नमो भगवते जयविजय मोहय मोहय स्थं भय २ स्वाहा अथयंत्रस्थना कंसाकारवृत्त यंत्रकरत्वा तन्मध्ये षट् कोणंकार्य ह्रीं परमार्थे नम अयं अक्षरं लिखेत् तदुपरि ऋद्धिमं त्रेणवेष्टयेत् पश्चात् ॐ नमो सास्त्राव्युन वोधनाय परमऋद्धि प्राप्ति ज यंकरायस्फ्रांह्रींह्रौं श्रीनम अनेन मंत्रेण यंत्रं यंत्रकूरविध्वंसनाय ज्रौं ह्रीं नम मंत्रेणवेष्टयेत् एकाक्षप दिवाय कोमंत्रजपिजे तो सत्रुस्थं भन होय कमनेफाटै वीजउपरआवि इति अष्टादसमा काव्यऋद्धिमंत्रयंत्रविधी विधान संपूर्णम:

॥१८॥

॥ अथ उगणसमोकाव्ययंत्रं २९ः

अथऋ ह्रिँ ह्रँ ह्रीं अर्हँ णमो विजहेराणं



किं सर्वरीषु ससिनान्हि विवस्वता वा

युष्मन्मुखेंदु दलितेषु तमस्सु नाथ। निष्पन्नसालिवनसालिनि जीवलोके कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः॥२९

किं सर्वरीकहतां अहो स्वामी उम्हारो मुखचंद्रथकी रात्रिदिवसरूपकार्य मंदजानो किसउ सूर्यम उहता तो उम्हारो मुखचंद्रमा निजो तिकरीदलितकहतां दूरिकीधो अंधकार॥ हे स्वामी किसो काम जलधर मेघनो पिण निके मेघ किसा एहवा बेजलधर २ पाणीनइ भारइकरीनम्या बइ एहवा तिणरो किसो काम २९ मोड्यो हैं हत्तांत बणी बइजीवलोके कहतां मृत्युलोकने विषेइ सालिनापनीवीजा पिण धानवनस्पतीतृण सर्वनीपनां एवी

॥ अथ उगणीसमाकाव्य ऋद्धिमंत्रयंत्रविधविधानलिख्यते अथऋद्धि ह्रँ ह्रीं अर्हँ णमो विजहेराणं अथ मंत्र ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऋयक्ष ह्रीं वषट् फट् स्वाहा अथ यंत्र स्तवना धनुष्टाकार यंत्र करत्वा तन्मध्ये ह्रीं कारं ले त्वा पूर्वे ह्रींकार अष्टदक्षणे संकार अधमे अष्ट यंकार अथ विधि एकाव्यपढिवा थकी वा ऋद्धिमंत्रजपिवा थकी वा यंत्रपासराखवा थकी पारकी विद्या को भय न आवे कोइ दृष्टिकामण टोणा टामण कस्यो काचालेनहीं और का इ भयनहोय इति उगणीसमाकाव्य यंत्रविधविधानसंपूर्णम्‌ः

॥२९॥

॥अथ वीसमा काव्यनो यंत्र मिदं २०॥

अथ ऋद्धिः ॐ ह्रीं अर्हं णमो :

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः

श्रीं ॐ श्रीं
ॐ ॐ ॐ
श्रीं ॐ श्रीं

ॐ नमो भगवते वृषभाय अर्थसौख्यकर २ स्वाहा ह्रीं नमः ॥

वं वं

स्वाहा: इति ऋद्धिमंत्रं ॥

णमो पणसमणाणं बुद्धि:

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ठः ठः

अहो स्वामी रूपना देवता महारइ विषइ तुम्हणा सइ जेहवउ ज्ञान सोभइ छइ जिण ज्ञानेकरी चउदइ राजलोकने विषइ प्रकाश कीधो छइ: तेहव उ ज्ञान हरिहरादिक अन्य देवताना सइ नहीं तेह हरिहरादिक देवा

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं नैवं तथा हरिहरा

लोकनायाइ क्षिवनत तेजे करी दीप तो उल्लसता एहवा जे मणि ना स्वामी कहता वइड्डूं रत्न नइ विषइ जेहवउ मोटो उ तेज छइ इष्टांतकहेइ छइ: तेहवउ तेज हे स्वामि कांचनाषं

दिषुनायकेषु । तेजःस्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं नै

मनइ विषइ सोभइ जो बाहिर थकी तेजवंत कहवइ तो विणका

च तेहवो न सोभइ छै २०

वं तु काचशकले किरणाकुलेपि ॥२०

॥अथ वीसमा काव्य ऋद्धिमंत्रयंत्र विधि विधानं लिष्यते अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो नाराणां अथ मंत्र ॐ श्रीं श्रीं श्रूं श्रः ठः ठः स्वाहा: अथ यंत्रस्थना अधर्मवंशाकार यंत्र कृत्वा ऐं ह्रौं कार श्रीं कार म ध्ये कृत्वा ॐ नमो भगवते वृषभाय अर्थ सौख्यकर २ स्वाहा ह्रीं न म अनेन मंत्रेण लिखेत वकार विंसति यंकारेण वेष्टयेत पश्चात ऋद्धिमंत्रेण वेष्टयेत अथ विधि एका वापनिवा थकी ऋद्धिमंत्र जपि वा थकी यायंत्र पास राषवा थकी संतानकी प्राप्ति होय राज लक्ष्मी जय विजय होइ रूप सोभाग्य की प्राप्ति घणी होय धनको संचय होय अरु बुद्धि प्रवल होय इति वीसमा काव्य ऋद्धिमंत्र यंत्र विधि विधानं संपूर्णम् ॥२०॥

भक्तामरजी

२१

॥ अथ इकिसमा काव्य यंत्र २१

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पञ्च समणाणं ॐ न

ॐ	न	मी	म
नि	वा	र	ग
य	म्भः	ण य	र
त्र	उ	ज्ञा	ते

मी माणिभद्राय जयविजयापराजितेभ्यं

॥ इकिस रिद्धिमंत्र ॥

सर्वकार्यसिद्धिः

श्रीमानतुंगसूरि कहै छइ अहो स्वा। मी हूं एहवउ मानु करूं छुं तां जाणं तुं ने। हरिहरादिक देवदीठा भला कांइ

दृष्टेषु करतां जिया दीठा पछी हृदय उम्हारइ विषइ संतोष पा। मइ जिमता वन्छ लागइ ति वां

मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा। दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोष

रे ज्ञेयास्फ हामणी ला गइ छाव

अहो स्वामी तुम्हारो दर्सन दीठा किसू जाणइ कारण इक विश्व पिरीनइ विषे अनइ कोइ देव अथ वामन कष्ट कोइ कुमन चित्तहरी

मेति। किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः। कश्चिन्मनो॥

नसकइ अन्य वांतरइ पिण ओर देवतां देखतां मन संतोष नथ रहइ तुम्ह विना ओर किहां २१॥

हरति नाथ भवांतरेपि २१

॥ अथ इकवीसमा काव्य ऋद्धि मंत्र विधि विधान लिख्यते : अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो पञ्च समणाणं अथ मंत्र ॐ नमो श्री माणिभद्राय जय विजा यअपराजिते भ्यं स्वाहा अथ यंत्र रचना यंत्र रस्त बोइ सं को स्तक कल्वा तन्मध्ये इदं मंत्रं लिखेत ॐ नमो भगवते सन्मय निवार णाय नमप्रस्थात ऋद्धि मंत्रेण वेष्टयेत अथ विधि एकावण दिन ताथकी एऋद्धि मंत्र जपिवाथकी ए मंत्र पासराखिवाथकी सर्वजन वसि होय त्रिकाल शुजन करै तो सर्व जन प्रिम होय संपदा घणी होय दिन २०८ जपीजे सर्व सिद्धि होइ इति इकीसमा काव्य ऋद्धि मंत्र विधि विधान संपूर्णम् :२१॥

२१

॥अथ वाइसमा का यंत्र २२

॥अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामि

श्रीमांनतुंग सूरि कहइ छइ हे भगवंत स्त्रीया पुत्र जण्या छइ जनम छइ

पुत्र वली जो अनेरी काइ माता

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्॥ नान्या सुतं

मरुदेवी नाभुं सरिखो पुत्र वी जी काइ स्त्री प्रसवी नहीं। ति दृष्टांत कहइ छइ

सगली दिसि नक्षत्र धारइ छइ सर्व दिसि नइ विषइ तारा गइ छइ पि ण सहस्र किरण सूर्य देव:

त्वदुपमं जननी प्रसूता। सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं

ते पाछि व कहइ छइ पूर्व दिसि जल धरे उगे तिणरा अंस जल किरण स ष्ट दे दीप्यमान ते सूर्य पूर्व दिसि विना बीजी दिसी कुमे नहीं: २२

प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालं २२

॥अथ द्वाविंसतिका व्यानि लिख्यते अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगा सगामणं अथ मंत्र ॐ नमो श्रीवीरे हि जंभय २ मोहय २ अवक्षरण कुरु कुरु स्वाहा अथ यंत्र रचना पट्याकार यंत्र कृत्वा षट्दल प्र थमे श्रीकार नवर्ण द्वितीये ह्रौंकार नवर्ण तृतीये नौंकार नवर्ण चतु र्थे ज्रौंकार नवर्ण पंचमे क्ष्रौंकार नवर्ण षष्टमे ह्रींकार नवर्ण कलेयं। कार नवर्ण अयं पकारेण यंत्रं कृत्वा तदुपरि ऋद्धि मंत्र लिख्येत अथ विधि एकावण दिवसथकी ऋद्धि मंत्र जपिवा थकी वा यंत्र पासरा खवाथकी वाट्ल दकोगा ट गावार २१ मंत्र गवि तो डाकिनी साकनी भूतपिसाच व्यंतर तामव बोल जेहने लागी होय मित्र स्वरूप नेब वाइ जे ओ सगले यंत्र बांधीजे तो सर्व दूर सण मिट जाय ९

तिद्वाविंसतिका व्य ऋद्धि मंत्र यंत्र संपूर्णम्

॥२२॥

॥अथ तेइसमा काव्य यंत्र॥२३॥

रं रं रं रं रं

अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो अ

सिविसाणं अथ मंत्र ॐ नमो भगवते

मोक्षसोख्यं कुरु २ स्वाहा ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं

यं यं यं यं यं

हे ऋषभादिदेव मुनि जे ऋषीश्वर ते | आदित्य सूर्य समान वर्ण
तुम्हनै परम पुरुष कहीनइ | रागादिक मल रहित नि
नमस्कार करै ते कहै छै | र्मलपा

त्वामामनंति मुनयः। परमं पुमांस। मादित्यवर्णममलं तमस
परूप तम जे अंधकार ते | एहवइ रूपइ सहित तुम्हनइ जुलवइ अन
हनइ हरण हारबइ | इम जाणीनै जे ऋषीश्वर ते मरण उत
पुरस्तात्। त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयंति मृत्युं ॥६॥६॥
इ जीपइ ती हे श्री ऋषभादिदेव हे मुनींद्र तुम्ह विना बीजो कोइ सीव प
द कहतां मोक्षमार्ग नहि सिव उपद्रव रहिता २३
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनींद्र पंथाः ॥ २३

॥अथ तेइसमा काव्य ऋद्धि मंत्र यंत्र विधि विधान लिख्यते अथ ऋद्धि ॐ
ह्रीं अर्हं णमो असि विसाणं अथ मंत्र ॐ नमो भगवते जयवति मम स
मिहितार्थ मोक्ष सोख्यं कुरु २ स्वाहा अथ यंत्र स्वनाद सकोष्टका
यं यंत्र कृत्वा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वसिद्धाय नमः अयां अक्षर लिखित तद्
परि ऋद्धि मंत्रेण वेष्टयेत् चतुर्दिक्षु वलिदत्वा पश्चात् रंकारेण वेष्टि
सेन वेष्टयेत् अथ विधि एक आपदि वा थकी वा ऋद्धि मंत्र जपिवा थकी
वा यंत्र पासि राखवा थकी वार १०८ पदि आपणा सरीर रक्षा की
जै औरपीवि कामोदी जेतोइ व्यंतर भूत प्रेत पिसाच रोग भय न होय

इति तेवीसमा काव्य ऋद्धि मंत्र यंत्र
वा विधि विधान संपूर्ण
॥२३॥

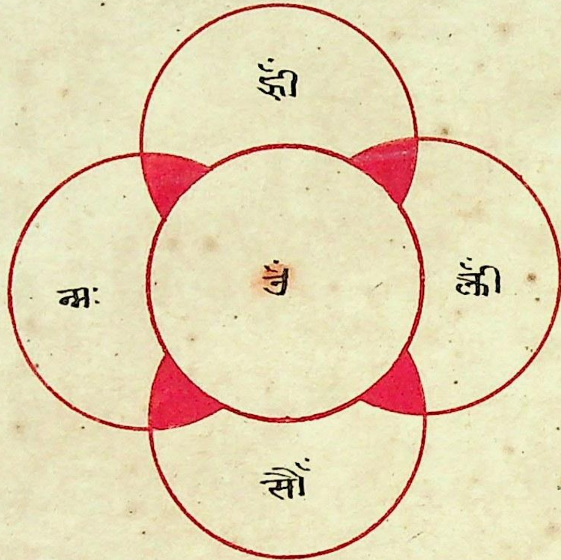
।।अथ छत्रीसमा का यंत्रं।।२४

ॐ स्थावरजंगमावायंकृत्रिममसकलं विषय:

ॐ ह्रीं अप्पणमेतास्मै देहं विषमं नीय।। ॐ नमोस्त

भगवती वद्धमाण सामिस्स सर्व

समीहितं करु २ स्वाहा ।।



हे कमणादिदेव तुम्हें। नइ संत मनुष्य अव्यय कहै छै कहै छै। कमन जायइं कर्मनउ फल तां त्रिहु समर्थ अथवा प्रभु संबंधि चिंतव्यउ न जाइ गुणानी संख्या इत्यादिक छै अथवा अदिरूपु तबइ वली सर्व कर्म युक्त हालण सर्व स्करु

त्वाम व्ययं विभुमचिंतम संख्यमाद्यं।। ब्रह्माणमीश्वर।।।

करइ स्वरूपं तनदी तेअनंत कहीइ जिम केतुनें दीपीज गतनो क्षयथाइ यतिमका | मनो रूपकी धीबीजें योगी व्यापार ज्ञाननां धणीतेहनो ईश्वर ते योगीश्वर योगमार्गनउ जाणइ अनेक बहु पिण बह

मनंत मनंग केतुं।।ऽ।ऽ।ऽ।।योगीश्वरं।विदितयोगमनेक

केवलज्ञानस्वरूपी रागादिमल रहित अमल निर्मल सजन मनुष्य तुम्हारा एहवा गुणनायक नाकरी वखाणइ:

मेकं।।ऽ।ऽ।। ज्ञानस्वरूपममलं।। प्रवदंतिसंता २४।।।।

।।अथ कृद्धि स्थावरजंगमावायंकृत्रिममसकलंविषयक्षत्त्के अवलामेतायजे देहिविषाकनीन। अथ मंत्र ॐ नमो भगवते वद्धमाणसामिस्स सर्व समीहितं करु २ स्वाहा। अथ यंत्र स्त्रना पंचदलं यंत्र करत्वा ॐ ह्रीं क्लीं सौं नम मध्ये अयं यंत्राक्षरं लिखिवात पश्चात् कृद्धिमंत्रेणं वेष्टितं आम्नाय एकाग्रमने रूप दिवाथ की जपिता थकी वायंच पास राखवा थकी मा था की मध्य वाय वायसर राष सं मध्य वायकता कीजे तो मा था की पिडा मीटे इति वर्तिसतिका व्यवृद्धि मंत्र यंत्र विधि ध्यान संपूर्णम।।२४।।

॥ अथ पंचविंसतिका यंत्र ॥ २५ ॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं

णमो दिव्वविसाणं झ्रां झ्रीं झ्रूं झ्रः स्वाहा

भगवते जयाय स्वाहा ॥

म प न मः द र न मी प

हेप्रभु गणधरादि देवतें बुद्धि ज्ञानवंत बुध देवतामति | वली कहइ छइ अ
धिकास बुध कहतां तियेअर्चित पूजित ॥ | हो स्वामी तूं संक

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात् । त्वं शंकरोसि भु

र छइ तीन लोकनइ | हे देव धाता विधाता छइ मुक्तिमार्ग प्रगटक
सुखकरवाभणी थ | रइ वा थकी अहो स्वामि त्रिजगआधार छइ व
की हे स्वामि: | जाणी मानतुंग सूरि

वनत्रयशंकरत्वात् । धातासि धीर शिवमार्गविधेर्विधे

कहै हे भगवान श्री | ताप्रगट उत्तम पुरुषो
त्तमछइ: २५
(द्वि व क ह)

धानात् । व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोसि ॥ २५

॥ अथ पंचविंसतिका वृद्धि मंत्रयंत्र विधिविधानं लिख्यते ॥ अथ
वृद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं णमो दिव्वविसाणं झ्रां झ्रीं झ्रूं झ्रः ।
क्रूं स्वाहा ॥ अथ यंत्र रचना षट्कोणयंत्र कृत्वा ॐ नमो परम
पदनमयंत्र मध्ये अयं अक्षरं लिखेत् तदुपरि वलिदत्वा पश्चा
तद्वृद्धिमंत्रेण वेष्टयेत् अथ विधि एक्का थप दिन थकी वा ऋद्धि
मंत्र जपितां थकी वायें उपासरा बीजे थी जन तरै कमाही नें गोला
आगन करी तेल में लाल होय सी गो लोक माही में सु का दिलेगो
लां सकदा फेन ही थी जक तरे इति पंचविंसतिका वृद्धि संपूर्णं २५ ॥

॥अथ दधिस्रवी समाका यंत्रं २६॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो छित्ततवाणं:

जयं जयं कुरु कुरु स्वाहा ॥

ॐ नमो जे ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं

श्रीं श्रीं श्रींउ श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं

ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं

मं मं मं मं मं मं मं

अहो श्री युगादिदेव तुम्हांनइं नमस्कार हु | वली नमस्कार हु वउं तिहांथ णी तुम्हें किहवा बउहथवी
वउं नगवंत केहवा बइं ती नलोकनी आ रतिना हरण हार॥

ॐ नमः त्रिभुवनार्तिहराय नाथ ॥ ॐ नमः क्षिति
नइ विषइ अमल नि र्मल कुषण समा नः | वली तिहां भणी नमस्कार हु वउं तुम्हे केहवा बउत्तीन जगतना परमेस्वर बोतीहां भणी:
तलामलभूषणाय ॥ ॐ नमः त्रिजगतः परमेश्वराय ॥
बली तहां भणी नमस्कार हु वउं केहवा बउ संसार समुद्रनी सोषणहार छउ जी २६:
ॐ नमो जिनन्नवो दधिसोषणाय ॥ २६

॥ अथ षट्विंसतिका ष्ट्यानि अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो छित्ततवाणं अथ मंत्र ॐ नमो ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं फट् परजनसो तेव व्यवहारी जयं २ कुरु २ स्वाहा अथ यंत्र रचना साथ्या के आकारि यंत्र करु तेवाद क्षणसहमे कारलि खवा ते ७ उत्तरे सहम ७ विंकारलि खवत पूर्वसहम ७ श्रीं कारलि खत पश्चिमे सहम ७ जंकारलि खवत पुन वलिं दत्ता ऋद्धि मंत्रे ण वेष्टयेत अथ विधि एका वापहि वाथकीवा ऋद्धि मंत्र जपिवाथकी यायंत्र पासरा षवाथकी तेल मंत्री मा पीवो पडी जे वार १०८ मंत्री जे सूर्य वार आधासीसी मथवाय सर्व दोष माण्या का जाय ॥ इति षट्विंसति काव्यानि संपूर्णम् ॥ २६ ॥

॥ अथ सताइसमा काव्य यंत्र ॥२७॥

जं	जं	जं	जं	जं

अथक्र ह्रीं ह्रीं अर्हं णमो छितत

ॐ	न	मो	त्र	ग
व	ते	स	र्व	थे
सि	द्ध	न्नो	रू	र्वा
य	ह्रौं	श्रीं	न	म

वाणंह्रीं नमोह्रीं चक्रेश्वरीदेवी क्रम

साधय२ सत्रुन्भ्रजय२ स्वाहाः

ठः	ठः	ठः	ठः	ठः

ह्रियै बैली मांनतेगरूरिकहै बडा कि सो वि स्मयक हतां आश्चर्य जो नाम साचो ते मिणी करीयुक्तबें समस्तकरी | सगलेगुणेकरी तुम्हे आश्रित वउ आका सरहितपणइ

को विस्मयोत्र यदि नाम गुणैरशेषै स्त्वं संश्रितो निर

करीमुनीस | अहो स्वामि दोषवउ म्हांने टलिगयावइ तेदोषकेहड़ रिबिराज | वा बइ हरिहरादिकनइ विटंबणा बइस्ते दर्पकीग

वकाससतया मुनीस दोषै रुपात्तविविधाश्रयजात

र्वक्रपनउ वडः पिण हे स्वामि तिणदोषे तुम्हाने पिण स्वप्नांतरेकहतां स्वप्नइ पिणक देही दीठान वइ:२७

गर्वै ॥ स्वप्नांतरेपिनकदाचिदपीक्षितोसि ॥२७॥

॥ अथ सप्तविंसतिकाव्यानि अथक्रह्रीं ह्रीं अर्हं णमो छितत वा णं अथमंत्र ॐ नमो ह्रीं चक्रेश्वरीदेवी चक्रधारिणी चक्रेण अनुकूलं साधय२ सत्रुन्भ्रजय२ स्वाहा अथ यंत्रस्य ना सत्तरस्ववि सतिको एकं कृत्वा ॐ नमो भगवते सर्वार्थसिद्धेभ्यो रूपाय ह्रौं श्रीं नमः अयं अक्षरेयंत्रमध्ये लिखेतव्यात रूद्धि मंत्रेण वेष्टयेत जे कारणको नविसति वेष्टितं अथविधिएकाव्य पढिवाथकी वा रूद्धि मंत्र जपिवाथकी यायंत्र पासराखवाथकी सर्वसत्रुवेरीको नास होयइ ति सप्तविंसतिकाव्यविधिविधान संपूर्णम् ॥२७॥

॥ अथ अष्टाविंसमा काव्ययंत्र २८॥

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो

महीतवाणं ॐ नमो भग

सर्वसिद्धि संपत्ति सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा :

ह्रीं ह्रीं ह्रीं सौं ह्रीं ह्रीं ह्रीं

हिवै श्रीमानतुंगसूरि अष्टमहाप्रातिहार्य कहइ वृक्षना ले जे असोकवृक्ष तिणइ संश्रित आश्रया बइठा छउ ऊंचा मयूखकिरण : एहवो निर्मल तुम्हारो रूप नितांत अत्यंत घणउ जसोभ

उच्चैरसोकतरु संश्रितमनमयूखं। माभाति रूपममल

इ वइ स्पष्ट प्रगट उजलता जे किरण जेहनइ तो किरणे करी वइ अस्तपमाड्या छइ अंधकारना समूह जिणे :

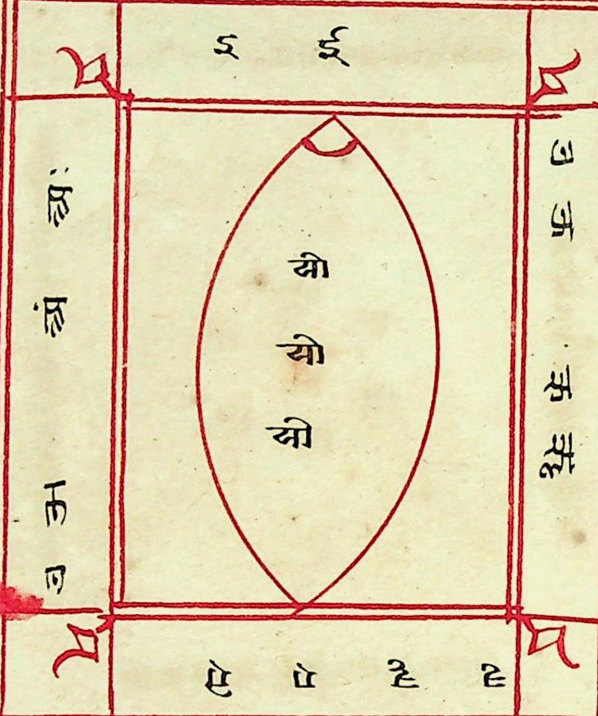
भवतो नितांतं। स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोविता

एहवा उदये सूर्यनउ बिंब मंडल पिणके हवो छइ मेघनइ पासवाडइ वर्त्तइ एजिम सोभइ इजिम : २८ :

नं। बिंबं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्त्तिी २८।

॥ अथ अष्टाविंसतिकाव्य ऋद्धिमंत्रयंत्रविधिविधानं लिख्यते अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो महीतवाणं आणमंत्र ॐ नमो भगवते जयविजय जंभय २ मोहय २ सर्व सिद्धि संपत्ति सौख्यं कुरु २ स्वाहा यंत्र कृत्वा तन्मध्ये सौं लिखित ह्रीं कार खड लीखीत्वा पूनर्वलिद तस्यो परि ह्रीं कारेण वेष्टयेत ऋद्धिमंत्रेण वेष्टयेत स्त्री सौभाग्य कार आयविधि एकाग्रपदि वाथकी ताऋद्धिमंत्र जपिवाथकी यंत्र पास राखवाथकी सर्व कार्यकी सिद्धि होय व्यापारमे लाभ घणो होय। रुगमै फाते जय होय सर्व घातकी रक्षा होय इति अष्टाविंसति काव्यानि ऋद्धिमंत्रयंत्रविधिविधानं संपूर्णम् ॥२८।

॥अथ फणतीसमाकाव्यं २९



अहो श्रीयुगादिदेव तुम्हारा सिंहासननइ विषइ मणि रतन जड्या बइ ते हनां किरणी तेहनी सिखा यइ विचित्र विवध ४ वलवर्ण | युक्त बइ ते ऊपरी तुम्हारो सरीर सोभइ बइ वली सरीर केहवो:

सिंहासने मणिमयूखसिखाविचित्रे। विभ्राजते तव

बिंस्फ वर्ण सरी षाश्च | वले तुम्हारो सरीर किसो सोभइ बइ जिम स्फ वदात गोरवर्ण बइ: | यं नउ बिंब आकासइ विषइ विलसता कि

वपुकनकावदातं। बिंबं वियद्विलसदं। शुलतावितान

रणनो समूह तुंगोके हतां उंग अंवो नदयाख जवर्ते तनां मंगकं परिजि मसुर्य सोभा पामइ तिम तुम्हारा सरीर सिंहासन ऊपरि सोभइ बइ २९

नं। तुंगोदयाद्रि। सिरसीव सहस्ररश्मेः २९ ॥ ॥

॥अथ फणत्रीसमाकाव्यानि अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं अथ मंत्र ॐ नमो णमिऊण पास विसहर फुलिंग मंतो विरहत नमस्कार करमंतो सर्व सिद्धि २ समीहिइ यउ द समरं नाण रलेजा गइ कुणइ मम सर्व सिद्धिं ॐ नमः स्वाहा अथ यंत्र स्तवना योन्य कारं यंत्रं कृत्वा मध्ये योकार त्रिन्नि लिख्यते पून वलिदत्ता चत्रुर्द्द सस्वरेण वेष्टयेत् उनऋद्धिमंत्रेण वेष्टयेत् अथ विधि एकाव्य ऋद्धि मंत्र पढिवा थकी विषकोंन्हषण मिटे वार १०८ पाणी मंत्री पाइजे विष ऊतरे इति फणत्रीसमीकाव्य ऋद्धि मंत्र यंत्र विधि

संपूर्णम् २९॥

॥अथतीसमाकाव्यंत्रं३०॥

८	८	८	८	८

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं

ॐ नमो भगवते महति महावीर ...

सोरव्यं२ दुःखं हर२ स्वाहा ॥

ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं

५	५	५	५	५	५	५

२	२	२	२	२	२	२

अहोयगादि देवउम्हारो सरीरस्वामरवी ऊतासोभइ बइते चामरवा लता झलतां म्बकंद नाकूलसमान कंजलासोभइबे | वलीसरीर किसौसोभइ ता इ रूउ कलधौतकद तां इ सोसो नो उत्तमस्क

कुंदावदातचलचामरचारुशोभं । विभ्राजते तव वपु

र्लतिणसमं नसंदर ॥ | ऊगतो चकचंद्रमाश्चवित्रुंचा तट इविष नीझरणधारानीधारामइजसीसोभ इउंचो तटमेरुपर्वतनौतिहां

कलधौतकांतं ॥ उद्यच्छशांकशुचिनिर्झरवारिधार ॥

सुवर्णनाकलससोभइ बइति मस्वामीरो सरीर सोभइ बइ ३०

मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव सातकौंभं ३०

॥अथतीसमाकाव्यलिख्यते अथऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं अथमंत्र अर्हं महे ह्रूडविध दे ह्रूडान् स्थंभय २ सर्वसिद्धिसौ रव्यं२ दुःखं गऊरू२ स्वाहा अथयंत्रस्तना पंचमकोष्टाकृत्वातन्म ध्ये पंचकोष्टकुंकारलिखित गोलाकारं वलिदत्वा पंचविसतिहं कारेणवेष्टयेत् तदुपरि ऋद्धिमंत्रेणवेष्टयेत् आकर्णलायत्र अथविधि एकावधदिवाधकी वाऋद्धिमंत्रजपिवायंत्रपासराखवा थकीचोरचोरीकरीवानपावे वगवगणपावेनहीं पंथमैराह मैगैलेवालता फदासूपढताजालेचोरसिंह अनेकजीवांको नयरूप जेनहीं इतितीसमो काव्य विधिविधा नसंपूर्णम्

३०

॥अथ इगतीसमा काव्य यंत्र॥३१॥

अथ ऋद्धि: ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरपरिक्कमाणं मंत्र

ॐ नमो उवसग्गहरंपासंवंदामिकम्म

घणमुक्कं विसहरविसनिन्नासं मंगल

कल्लाणआवासं इति

ॐ

अहो श्रीयुगादिदेव त्हारा मस्तक उपरि तीन छत्र छत्राति छत्र पिणके हवा छइं केह मा सरीषा मनोज्ञ सोभइ छइ: | केहीतट मेरु पर्वतनो तिहां स्फटिकनाकलस सोभइ छइ तिम

छत्रत्रयं तव विभाति ससांककांत। मुच्चैः स्थितं स्थ

स्वांमीरो सरीर सोभइ वली मस्तक ऊपरि रह्या थका वली किसा छइ ते जे करी आ छाया छे। भानुकर सुर्यनउ प्रताप जिणइ भानु सूर्यनो प्र | ताप एजिणेइ मुक्ताफ लमोतिना समूहते हनी जालीनी रचना

गितभानुकरप्रतापं। मुक्ताफल। प्रकरजालविवृ

तिणइ करी वृध सोभइ छइ | छत्रत्रय किं सूचकइ तां थकां तीन जगनमनोपरमेश्वरपणा नइ कहतां थकां छइतीएह॥ छत्रयकहइ छइ तीनभुवननोस्वांमी छइ ३१

द्धसोभं। प्रख्यापयत्त्रिजगतः। परमेश्वरत्वं॥३१॥

॥अथ इकतीसमा काव्य ऋद्धिमंत्र यंत्र विधी विधान लिख्यते। अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरपरिक्कमाणं। अथ मंत्र ॐ नमो उवसग्गहरं पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं विसहर विसनिन्नासं मंगलकल्लाण आवासं॥॥ अथ यंत्र रचना चउरस यंत्र कृत्वा तन्मध्ये क्रौंकार तदुपरि ह्रीं कारस्य चतुर्दिसं लिखित पश्चात् गंकारवा विंसतियेन वेष्टयेत् ऋद्धि मंत्रेण वेष्टयेत्। अथ विधि एकावप दिवा थकी। चाऋद्धिमंत्र जपिवा थकी यंत्र पास राखवा थकी। राजद्वार मसन मांन होय। राज्य वसिकरण प्रयोग यंत्र:

इति इकतीसमा काव्य ऋद्धिमंत्र यंत्र विधी विधानां संपूर्णम्॥

॥३१॥

॥अथवत्तीसमांकाव्यंयंत्र॥३२॥

अथऋद्धिंजेंह्रीं अर्हंणमो

घोरगुणाणंबंभयारीणं

ॐनमोह्रांह्रींह्रूंह्रः सर्वसिद्धिऋद्धिं

वांबाकुरु२ स्वाहा ॥

विस्मयचित्तीकमनस। किलवर्षयंति। न्यग्रबंधन

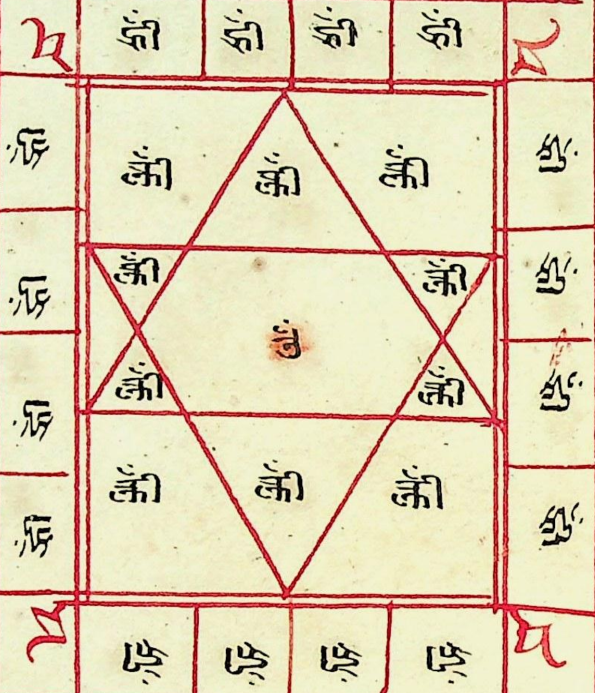
कमनसः। किम्फतावदंति। त्वसंगताविहसिताजग

तीसमस्ता। सांमोदनीविद्हसित्ताम्फ दयेन धाम्नां ३२

॥अथवत्तीसमांकाव्यानिलिख्यते अथऋद्धिंजेंह्रीं अर्हंण
मो घोरगुणाणंबंभयारीणं अथमंत्र ॐनमोह्रांह्रींह्रूंह्रः सर्व
सिद्धिऋद्धिंवांबाकुरु२ स्वाहा अथयंत्रस्थापना पचकोष्टकं
कृत्वा गोलाकारमध्येंह्रीं पंचअक्षर पश्चात तत्रस्वं वलिं
दत्वा पश्चात पंचदस १५ सौंकारेणवेष्टयेत पश्चात ऋद्धि
मंत्रेणवेष्टयेत अथविधि एकाव्यपठितवाथकी वाऋद्धिमं
त्रजपि वाथकी यंत्रणासरावतावथकी कवारीकन्याकनेस
तकुतायसतीनमोराकरी गा२०८ मंत्रीकुमरगांधीजे धरण
पेटकीपीडासंग्रहणीएतावीकारोगमिटे ॥इतीवत्तीसमां
काव्यऋद्धिमंत्रयंत्रविधविधानसं
पूर्णं॥३२॥

॥अथ तेतीसमो काव्य यंत्र ३३॥

अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो



परमयोगीश्वराय नमो नमः स्वाहा

सव्विपत्ताणं ॐ ह्रीं

द्धैश्चपिङ्गस्तमलम :। अमविप्रणोसा। उष्यकद्दस्वक

रमंमलसंभ्रमेणवीक्ष्यपतन्तोर्हवभिक्रांचनकांचना

मांपीडीधनंजजतिकस्पनमीनमाज्ञां ॥३२॥ ।५।

॥अथ काव्यानि। अथ ऋद्धि। ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्विपत्ताणं
अथ मंत्र ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ध्यान सिद्धिपरमयोगीश्वराय नमो
नमः स्वाहा। अथ यंत्र रचना षटकोणं यंत्रं कृत्वा। तन्मध्ये ॐ
कार उपरि दस १० क्लींकार रचित तद्वलिं दत्वा षोडस १६।
ह्रींकार वेष्टयेत पश्चात् ऋद्धि मंत्रेण वेष्टयेत। अथ विधि।
काव्य पढि गाथकी ऋद्धि मंत्र जपि गाथकी। वाय उपासरा ष
गाथकी गांफ्रा मी दीजे वार २१ कंवारी कन्या को कात्यो सूत
संफ्रा सोरो करि ह्वाण के गले बांधीजे तो सीयो एकांतरो वेलां तरो
तेज रो ताप सर्व प्रकार को जाय इति तेतीसमो काव्य संपूर्ण।
॥३३॥

॥अथवृत्तीसमोकाव्ययंत्र॥२४॥

अथऋद्धिः ॐ ह्रीं अर्हं णमो रिद्धि

हो सद्धिपत्ताणं अथमंत्र

ॐ नमो ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं क्लौं पद्मा

वत्यै नमो नमः इति मंत्रः

फं	फं	फं	फं	फं
फं	मः	य	त्र	फं
	न	ॐ	य	फं
फं	ह्रीं	श्रीं	म	फं
	फं	फं	फं	फं

दिव्योध्वनिर्ध्वनितदिग्वलयस्तवार्हन्। व्याख्यात्र

स्फुत्सकयतेञ्ज्ञिन्वाध्वनीनात। नत्वार्थदेसनविधौ

नत्रसर्वजंत्र। माषाविंसिवमधुलिटु। स्फुरसार्थयाः॥२४

॥अथवृत्तीसमोकाव्यऋद्धिमंत्रयंत्रविधिविधानलिख्यते अथऋद्धिं ॐ ह्रीं अर्हं णमो रिद्धीहो सद्धिपत्ताणं अथमंत्र ॐ नमो ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं क्लौं पद्मावत्यै नमो नमस्वाहा यंत्रस्वनात्वत्र स्त्र नवकोष्टकंकृत्वातन्मध्ये ॐ यंत्रमनमअक्षरंलिखेत फंकारेणवेष्टदसवेष्टयेत त्रिनवलिदत्वात्रिनऋद्धिमंत्रेणवेष्टयेत अथविधिएकावण्दिवाथकी ऋद्धिमंत्रजपिवाथकी यंत्रपासराषवाथकीगर्भस्थम्भहोय ककंबलकहत्रकीजाबीकोजोरोकरिवार १०८ अथवा २१ फगलकीचूणीदीजेतो गर्भस्तंभहोय अधूरोवालकनजाय इरोपागेबालकहोय

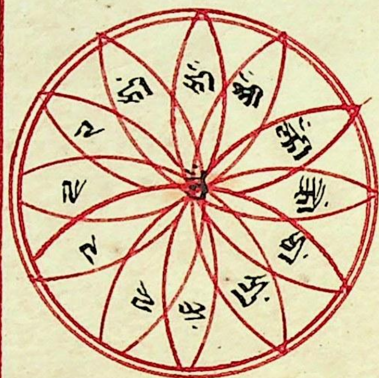
इतिवृत्तीसमोकाव्यमंत्रयंत्रसंपूर्णम्

॥२४॥

॥अथ पंचविंसमा काव्य संत्र २५॥

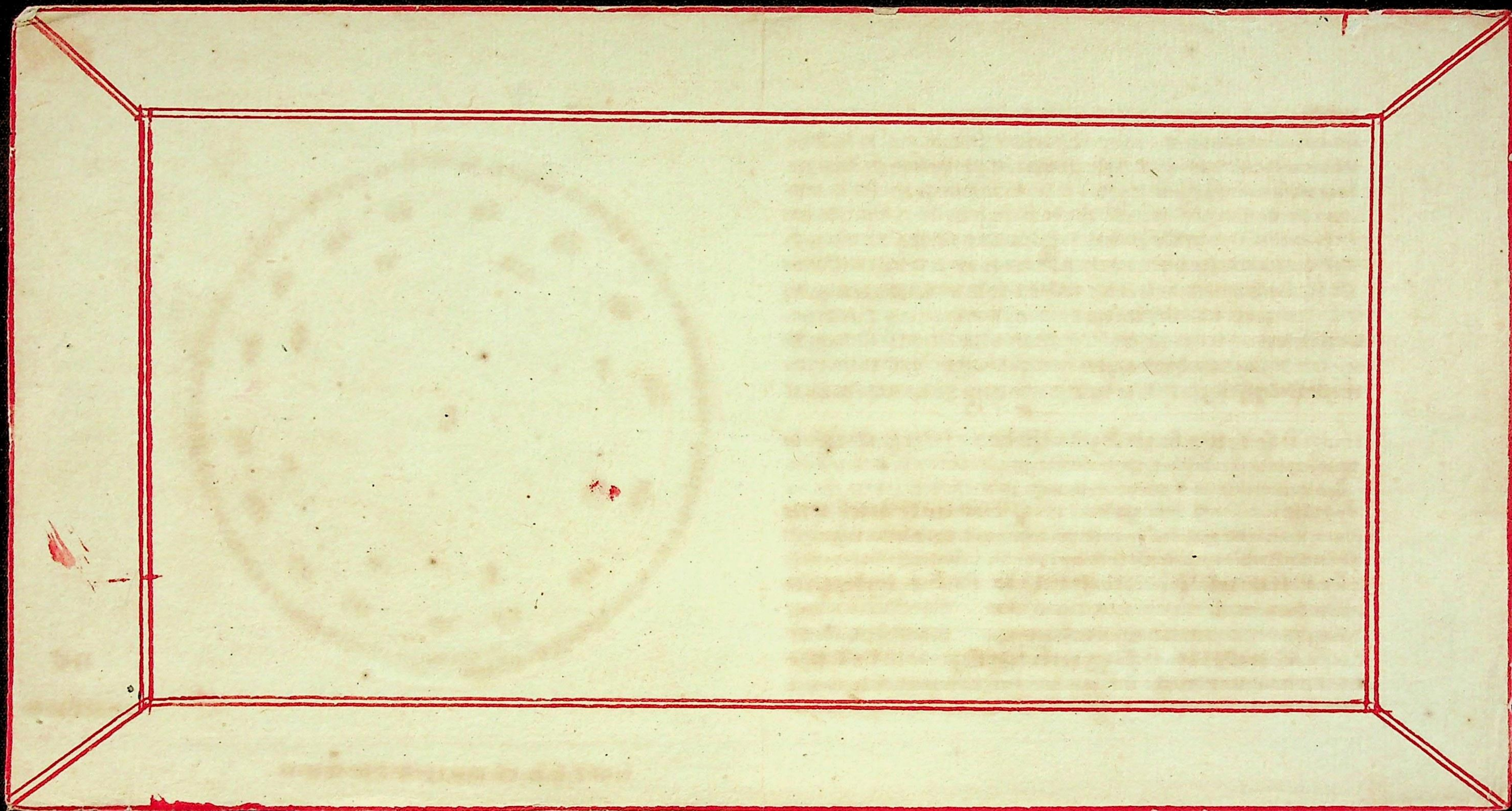
॥अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं णमो

ॐ नमो गजगमने सर्व

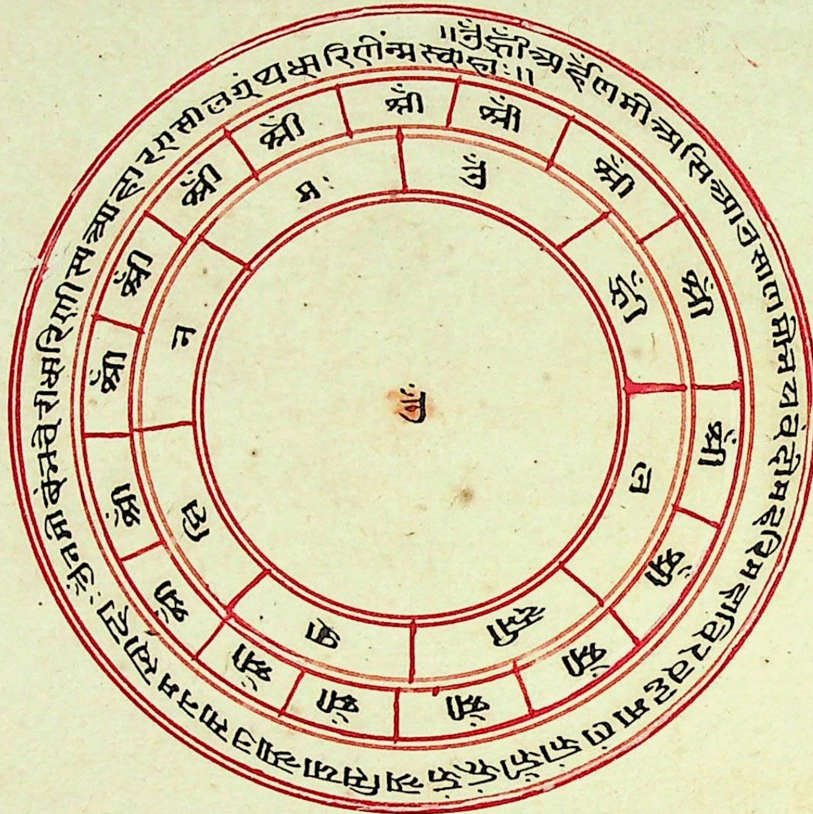


त्रिश्लोकजैत्रमदमोद्गमहीमहेंद्र। सद्यो जिगाय भग
वान्निगदन्निवेत्थं। संतर्जयन्नयुगपद्देवनयंति कुंसा
मंडधूनिर्मदनिकुंडुम्निरुस्तुकीर्त्ते:२५

॥अथ पंचविंसमा काव्य ऋद्धि मंत्र यंत्र विधि विख्यंत लिख्यते अ
थ ऋद्धि ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं णमो जल्लोसहिपत्ताणं अथ मंत्र ॐ न
मो जय विजय अपराजिते महालक्ष्मी अमृतस्रवणि स्वधी
स्वाहा अथ यंत्र रचना गोलाकार रखाद सकोष्टकाकार्यो तन
मध्ये ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्रौं फ्रां फ्रीं क्तद २२ ह्रीं अयं अक्षरं लिखे
त् पश्चात् वलिं दत्वा ॐ नमो गजगमने सर्वकल्याणमूर्त्तये रक्ष
२ नम तदुपरि ऋद्धिमंत्रेण वेष्टयेत् अथ विधि एकाक्ष पदि
वा मंत्रेण पवित्राय त्रपास राय बराथ की डरनदास्त्रो रमारी
गंजीने सकरस्तोत्र वेति जाप करवी जेवाय त्र की पूजन कर
वाइजे राजकी बधवारी अति होय इति पंचतीसमो काव्य संपू
र्णम्:॥२५॥



॥ अथ अडतालीसमा का यंत्र ४८॥



अहो जिनेंद्र श्रीयुगादिदेव म्हारा स्तोत्र | गुणी थकी मैं यत्न करी इक्त
रूप माल म्हारा गुणा ते हिज सूत्र संबंधी | रीनइ जलाजे उक्तरत्तम
स्तोत्रस्रजं तव जिनेंद्र गुणैर्निबद्धां । भक्त्या मया रुचिर
जी म्हांते हिज जांणी | आजे मनुष्य ए स्तोत्ररूप माला कंठ नइ विषइ
पांच वरणा फूल ऊं | धरइ ए तावता नि तएन गुणइ गुणइ ते मनुष्य मोटे
वर्णविचित्रपुष्पां । धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रं ।
तेमांन तीक्षी पदवी पामइ अवस्य करी नइ घणी लक्ष्मी पामइ ॥४८॥
इति श्रीभक्तामरस्तोत्र मानतुंग आचार्य विरचितं भक्तामरस्तोत्र संपूर्णं
मानतुंगमवसा समुपैति लक्ष्मीः ४८ । इति श्री मानतुं
॥ दूहा करतसकीरतवर्मी वीन पाषांणुक जाय करत तो जाती रहे
कीरत कबहूं न जात ॥१॥ लिपिकृतं लाभ नीवेमचंद ॥ बीसनगरमध्ये
गआचार्य विरचिता यंश्री आदिनाथ स्तोत्र संपूर्णं ॥

॥ अथ अडतालीसमा का वा ऋद्धि मंत्र यंत्र विधी विधान लि
ष्यते अथ ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हं णमो असिआउसा णमो जयवंदोम
हरिमा ह्रा ह्रीं रवदमाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः असिआउसा नमः स्वाहा
अथ मंत्र ॐ नमो बंभचेरिधारिणी सणआहारणसीलगुणधा
रिणे नमः स्वाहा अथ यंत्रस्त्रना अष्टदलकमलं कृत्वा ॐ ह्रीं
लक्ष्मी प्राप्तिं नम अयं अक्षरं यंत्रमध्ये लिखेत् पश्चात् २ षो
डसका २४ श्रीकारेण वेष्टयेत् तदुपरि ऋद्धि मंत्रेण वेष्टयेत्
अथ विधि एका वा पद्दिवाथ की ऋद्धि मंत्र जपिवा यकी यंत्र पू
जनथकी अष्टोत्तरसत्त जाप १०८ नितप्रती जे ४१ दिन मैं स
र्व सिद्धि होय मनोवांछित कार्य सिद्धि इति अडतालीसमा का
वा ऋद्धि मंत्र यंत्र विध विधान संपूर्णं ४८ ॥ इति श्री भक्तामरजी
मंत्र यंत्र संपूर्णं ॥ श्री ॥ संवत १९५० ॥ ३५ रामी ती बेसाष सुद ११

